वर्ष 34 अंक : 5 8.9.2011 गुरुवार (सितंबर-अक्तुबर) शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये।

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

સ્વામીશ્રીનો સંદેશ.

આપણા અપૂર્વ ઉજવણી – આધ્યાત્મિક જીવનમાં

ને સાક્ષાત્કાર કરાવનારાં

ને નવા – વર્ષના – શુભારંભ

આ વર્ષ તો સૂક્ષ્મ દિવ્ય સૌનાંય જીવનમાં લખાઈ જશે.

કારણકે – એમ છે – તેમ –

દાસ-દાસના ગુણાતીતને – ભગવાન સંત ને ભગવદીઓ સ્વરૂપે

સ્વભાવનાં ડહાપણ:

કર્તા – – કર્તા – આજ્ઞાપાલન – તો સમાગમમાંથી જ ડહાપણ –

તો પણ – સેવાય – તો અનુભૂતિનું બળ વધતું ઘણું –

તોપણ કોઈક વિરલા વર્તે – પણ અભિપ્રાય ન બંધાય –

ને તોપણ સમજાવીને રહે –

પણ – દાસત્વ – પ્રેમ – ભગવાનના અખંડ દિવ્યભાવ ન રહે

ને તોપણ કોઈકમાં જ – પણ – સમગ્ર સત્સંગમાં કે સર્વત્ર –

સમ્યક નિર્દોષભાવ ન જ રહે તો ન જ રહે – કોઈક છાંટો રહી જાય –

તો –

મૂળગત પ્રારબ્ધ ન ટળાય કે પ્રકૃતિ

કોટિ સાધનો કે ઉપાયોથી પણ ન ટળે

તે સાધુતાની અનુભૂતિ આત્મનિષ્ઠ કૃપા પામવાથી ટળી જાય

ને

આ વર્ષ અક્ષરધામરૂપ બની દિવ્યતાનો – ભગવાનનું સુખ પામતા રહે

ને

જીવનમાં આવનારે સર્વને ખૂબ ખૂબ દિવાળી આશિષ પાઠવું છું.

[illegible]

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती
एवं
प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्य वर्ष की
शुभ दीवाली एवं नूतन वर्ष के आगमन पर...

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि हम प्रगट के उपासक हैं और हमारा ज्ञान भी प्रगट है। इस बात का अनुभव कई प्रसंगों पर हम सभी ने किया भी है कि मंदिर में प.पू. गुरुजी यदि किसी विषय में बात या चर्चा कर रहें हों, तो चाहे रोजाना की सभा के दौरान पढ़ी जा रही किसी पुस्तक में से या सुने जा रहे किसी आशीर्वचन में उसी विषय में बात आएगी। और... जिनके दिमाग़ में मानो कोई बात न बैठती होगी, वे भी मानने के लिए मज़बूर होते हैं कि प.पू. गुरुजी की बात सही ही है।

अबकी बार दीवाली एवं नूतन वर्ष के लिए प.पू. काकाजी द्वारा लिखा गया निम्न आशीर्वाद पत्र जब फाइलों में से मिला, तो ऐसा ही प्रतीत हुआ कि २०१२ में **'साक्षात्कार हीरक जयंती'** हमें किस प्रकार मनानी है, उसके लिए प.पू. काकाजी ने आज भी प्रगट रहते हुए अनोखी सूझ दे दी।

सो, अपनी सीमित बुद्धि से और कुछ सोचने की बजाय प.पू. काकाजी द्वारा दिए गए निम्न संदेश के एक-एक शब्द का मोल समझ कर, उसी ढंग से हम चलने लग पड़ें। यही हमने सही अर्थ में **दीवाली एवं नूतन वर्ष** मनाया कहा जाए। इससे भी अधिक, प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती और प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्य दिन की सच्ची प्रसन्नता भी प्राप्त कर पाएँगे। तो आओ, **ऐसे मनाएँ २०१२...**

स्वामिश्रीजी सत्य हैं। २७.८.८४

हमारे जीवन और सत्संग समाज में
सच्चे और अपूर्व ढंग से उत्सव मनाने के एवं नए वर्ष के शुभाशीष।

यह वर्ष तो स्वर्णाक्षरों से सभी के जीवन में लिखा जाएगा।
क्योंकि–
धाम-धामी और मुक्तों को–**भगवान, संत और भगवदी** के स्वरूप-वे जैसे हैं वैसे पहचानने कठिन।
शायद-शायद पहचाने भी जाएँ तो समागम में रहना कठिन।
समागम में भी रह पाएँ, लेकिन अनुवृत्ति (मर्जी) के मुताबिक वर्तना कठिन।
कोई विरला वर्त भी ले, लेकिन अभिप्राय समझ में नहीं आ सकता
और...
यदि उसे समझ कर भी कोई भक्ति करे,
परंतु–फिर भी **पाँच मिलजुल** कर **अखंड दिव्यभाव न रख पाएँ** और समझो वह भी कोई रख ले,
लेकिन समग्र सत्संग में या सर्वत्र-सम्यक् निर्दोषभाव तो नहीं ही रहे। तिलभर कसर तो रह ही जाए।
सो–
मूलभूत वासना और स्वभाव या प्रकृति, जो कोटि साधनों या उपायों से भी न टले,

वो मन-वचन और कर्म से अति बड़े (पुरुष) की अनुवृत्ति पालने से टल जाए और जीव अक्षरधाम रूप बन कर जीतेजी ही भगवान का सुख प्राप्त करे और संबंध में आने वाले सभी को दिलेरी से अर्पण भी करे।

और वो भी यदि न सूझे या समझ नहीं आए तो–

प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसे अति बड़े पुरुषों के केवल विशिष्ट प्रकार के अनुग्रह से संभव है।

तो खुल्ले दिल से नम्रभाव से-सरलता से प्रार्थना करते रहें;

ताकि सर्वोपरि सत्कर्म–

किसी का कुछ चुभता हो-भावफेर होता ही है–वो आड़े न आए और वह टल जाकर

दिव्यभाव ही रहे ऐसा महायज्ञ–

स्मृतियज्ञ के रूप में करना आए और वैसा बल सभी को मिले एवं जोड़ में काम करना सीख जाएँ।

श्रीजी महाराज वैसी दिव्यदृष्टि और दिव्यशक्ति सभी को दें

और

उसके मुताबिक दो भिन्न अंग वाले और समकक्षा के मुक्तों के साथ रसबस होना आ जाए

एवं

भेदभावरहित और विरोध के बिना–

मिलजुल कर सभी मुक्त अभिप्राय के मुताबिक सत्संग की सेवा-निष्काम भक्ति कर पाएँ–

उत्सव का ऐसा फल मिले यही अभ्यर्थना और नूतन वर्ष के शुभाशीष!

आपके ही

दादुकाका के हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण!

✡✡✡

आए, प्रार्थना के परब, शरद् ऋतु के संग!

अंतर से धन्यता व्यक्त करें –

हे! गुरुहरि पप्पाजी, ९ सितंबर को...

आपका प्राकट्य पर्व यानि गुरुहरि योगीजी महाराज के संकल्प को चरितार्थ करने आई विभूति के अवतरण का महापर्व! ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साथ प.पू. बापा की योजना में शामिल होकर आपने हमें मानव में से महामानव के मार्ग पर अग्रसर करके कृतार्थ किया।

हे! प.पू. दिनकरभाई,

९ अक्तुबर को आपका प्राकट्य दिन...

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज आपका नाम लेते हुए खूब गर्व अनुभव करते। अपनी विरल सरलता से आपने न केवल ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के हृदय में स्थान लिया, बल्कि उनकी पहचान बन कर जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने का भगीरथ कार्य गतिशील रखा है।

६ अक्तुबर–दशहरा, हे! प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी आपका पार्षदी दीक्षा दिन...

गुरुहरि योगीजी महाराज से अपना जीव जोड़े हुए आप भगवान श्री स्वामिनारायण की गुणातीत संत परंपरा के आध्यात्मिक वारिसदार हो। गोंडल-अक्षर मंदिर में आपको दीक्षा देते हुए गुरुहरि योगीजी महाराज ने आशीर्वाद दिए थे– *‘माया तुम्हारे आड़े नहीं आएगी...’* और... आज जगत की माया में लिप्त अनेक जीवों को आत्यांतिकी मुक्ति के मार्ग अग्रसर करके जीतेजी अक्षरधाम का अधिकारी बनाने का युगकार्य आपके

द्वारा क्रियान्वित है। हमें आपका जोग मिला, यही हमारा खूब सौभाग्य है!

११ अक्तुबर, शरद्पूर्णिमा–हे! मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी आपका प्राकट्य दिन, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के भागवती दीक्षा दिन एवं

प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि...

भगवान स्वामिनारायण ने एक नया संप्रदाय प्रस्थापित करके न केवल जीवों का कल्याण किया, अपितु मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को साथ में लाकर, आश्चर्यकारक रूप से प्रभु धरातल पर मानवस्वरूप में प्रत्यक्ष रहे और अपनी सर्वोपरिता दिखा कर वे सभी के जीव में बैठ गए। सच, गुरु गुणातीत के प्राकट्य से भूतल पर एक शुद्ध जीवंत गुरुपरंपरा शाश्वत् कर दी।

भगवान स्वामिनारायण के साथ उनका अद्वैत होने के बावजूद गुरु गुणातीत उनके प्रति स्वामीसेवकभाव से रहे और 'विशिष्टाद्वैत' का दर्शन कराया। अपनी वाणी, वर्तन और विचार से साधुता की सच्ची परिभाषा दी और... अपने आश्रितों को सदा सुहाणी रखते हुए विविध प्रकृति-स्वभावों से छुटकारा दिलवाने के लिए प्रत्यक्ष स्वरूपों को सौंप दिया। प्रत्यक्ष स्वरूपों ने भी जो जीव दिल की सच्चाई और दिव्यभाव से उनसे जुड़ गया, उसे सहजता से प्रकृति-पुरुष के भावों से परे करके 'गुणातीतभाव' में स्थित कर दिया।

ऐसे गुणातीत स्वरूपों के मंगलकारी अवसरों के निमित्त हम उनके गुणों एवं उनके द्वारा दिए 'ब्रह्मज्ञान' का मनन करते हैं। प्रत्येक गुणातीत स्वरूप ने अपने संबंध में आए जीव की कसर टाल कर, उसे हर प्रकार से सुखी करने में कुछ बाकी नहीं रखा। सभी स्वरूपों की बातों का यदि निचोड़ निकालेंगे, तो भाषा भले ही बदली हुई सी लगे, लेकिन सबका 'सुर' तो एक ही सुनाई पड़ता है।

तो, अब हम भीतर में टटोलें कि **उनके 'सुर' से हमने 'अपना सुर' कितना मिलाया या जोड़ा!**

आओ, हमें मिले प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के सुर में अपना सुर मिलाने, अंतर से उन्हें राजी करने और उनके द्वारा हमसे रखी अपेक्षाओं को साकार रूप देने के लिए वर्षों पूर्व **गुरुहरि प.पू. पप्पाजी** द्वारा **प.पू. गुरुजी** को लिखे गए निम्न पत्र के एक-एक शब्द पर आत्म चिंतन करें और अपने प्रगट प्रभु की मूर्ति सदैव के लिए जीव में हँसती स्थापित करने के लिए, अपने हठ, मान, ईर्ष्या, आशा, तृष्णा को तिलांजलि देते हुए **दीवाली** एवं **नूतन वर्ष** की सुप्रभात एवं **'पराभक्ति पर्व'** के आगमन पर सही अर्थ में अर्घ्य दें...

विजयादशमी – विजय का दिन है। लाखों वर्ष पहले श्री रामचंद्रजी ने इसी दिन रावण पर विजय पाई थी। सत्ययुग था। तत्पश्चात् आध्यात्मिक विकास में श्री कृष्ण भगवान ने **'निर्गुण मार्ग'** का प्रस्थान शुरू किया। श्रीजी महाराज ने उससे आगे **'निष्काम धर्म'**-गुणातीत धर्म-संकल्परहित-लोक, भोग, देह और पक्ष से परे शुद्ध चैतन्यरूप (वच.गढडा मध्य ३०) होकर परब्रह्म में जुड़ने का रास्ता पृथ्वी पर अवतरित होकर खोला। अभी भी वह कार्य चालू ही है। श्री अक्षरपुरुषोत्तम के मनुष्य देहधारी दिव्यविग्रह स्वरूप फिलहाल प.पू. योगीबापा हैं। **सैद्धांतिक रूप से वे प्रसन्न हो जाएँ, तो कृपा दृष्टि करके जीतेजी ब्रह्मरूप कर ही दें** और परब्रह्म में जोड़ दें। **यह केवल उनके ही हाथ की बात है।** सो, किसी भी प्रकार उन्हें प्रसन्न कर लेना यही जीवन का उद्यम! यही ज्ञान! वह तो हमें हुआ है। अब रहा, उस ज्ञान के मुताबिक वर्तना, उमंग से हाँजी-हाँजी करते रहने का-दृढ़ निश्चय करने की बात। और... उन्हें प्रसन्न करने के मार्ग पर अतिश्रद्धापूर्वक

प्रस्थान करने का-निश्चय करने के लिए इसके (विजयादशमी) जैसा दूसरा कोई पर्व नहीं। सो, **याहोम हो जाएँ–फत्तेह है आगे।** (वच. सारंगपुर १८ का पहला पैरा, मध्य १३ और अंत्य. २)

आध्यात्मिक प्रस्थान का निश्चय दृढ़ करते ही-वच. मध्य ७ के मुताबिक तत्काल अविकारी कर दें ऐसे संत तो हैं–सो, वे तुरंत लग पड़ेंगे और... जीवमात्र को लोक, भोग, देह और पक्ष-नात, जात, वासना और स्वभावरूपी गढ़ जो आड़े आते हैं, उसे वे तुड़वाएँगे ही। उस समय मान्यताओं और अपने माने हुए सत्यों, धर्मों एवं संकल्पमात्र को तोड़ने की क्रिया जैसे ही शुरू होगी कि परेशानी-बेचैनी की परंपरा शुरू हो जाएगी।

तब, केवल श्रद्धा और धीरज रख कर उनकी मूर्ति की स्मृति करने के स्वधर्म से चिपके रहना। तो, क्लोरोफॉर्म देकर सारे ऑपरेशन्स वे कर डालेंगे ही, ही, ही, ही, ही, ही, ही, ही, ही, ही, ही। इसमें एक प्रतिशत भी शंका नहीं। सो, जब-जब ऐसी परेशानी-बेचैनी आए, तब दूसरा आकार, दूसरों के दोष न देखना, बल्कि ख़ुश होना कि हे महाराज! यह प्रसंग मेरे लिए ही खड़ा करा है-लाए हो। और... स्वयं का दोष क्या है? इस बारे में अंतर्दृष्टि करेंगे, तो उपरोक्त चार में से एक होगा ही, जो ढूँढने पर मिलेगा। भीतर का वह चोर मिलने पर केवल प्रार्थना करना कि हे महाराज! यह चोर निकाल दो और तत्काल वह निकल ही जाएगा! **आजमा कर देखने जैसी यह बात है।** वच. वरताल १६ में महाराज ने सत्संग का और भजन का जो आग्रह रखने के लिए कहा है वह यही है। तो वच. अंत्य. ३९ के मुताबिक परमात्मा की लगन लगा देना और शूरवीर होकर सामना कर लेना। भीतर में (भगवान की) मूर्ति पकड़े रखनी-बाह्यदृष्टि ही नहीं–वह रास्ता ही बंद!

ब्रह्म के तीन गुण हैं–व्यापक, प्रेरक और नियंता (वच. प्रथम ६२)। वे तो हमें साकार मिले हैं! फिर किसकी ताक़त है कि हमारे साथ कुछ गलत कर पाए? हमारा कुछ बिगाड़ सके? सो, **दूसरा कोई गलत करता दिखाई पड़ता है, वहाँ हमारा ही दोष है** और मन का वह आवरण दूर होने पर वही लीलारूप दिखाई देगा।

तो जब तक सब कुछ लीलारूप नहीं दिखाई देता, तब तक अपना अधूरा है ही-बाकी ही है, यूं मान कर अपनी दाढ़ी बुझा लेने की ही बात रखना। बाहर देखना-करना ही नहीं। जब तक आत्मा में परमात्मा का दर्शन न हो जाए, तब तक **'ब्रह्मयज्ञ'** और **'ज्ञानयज्ञ'** करते ही रहना। वच. प्रथम २४, मध्य ६६ का आख़िरी पैरा एवं मध्य २२ हमारा आदर्श है!

चंद्र पर जाना हो, तो गेगरीन का अनकन्डीशनल सरन्डर करके, वो जो कहे वैसा करा करें तभी जाया जाए। इस पृथ्वी और यहाँ के एटमॉस्फीयर का हमें जितना मर्जी ज्ञान हो, लेकिन वह (ज्ञान) अवकाश में निकम्मा है। यूँ सभी ज्ञानों की-तर्कों की यह दशा है। सो, बुद्धि बंद ही करके दूसरों का (दोष) देखे बिना शुरू कर देना! फिर तो उत्तरोत्तर अनुभवों की परंपरा शुरू हो जाएगी।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा–जीतेजी अक्षरधाम का सुख क्या कि शुभ संकल्प और अंतर में ठंडक रहे। सो निरंतर–ऐसा न बने, अखंड लीला न दिखाई दे, अहोहोभाव नहीं रहे तब तक यानि–क्षोभ होता है, परेशान हो जाते हैं या किसी का अभाव आता है, क्रिया नहीं जँचती तब तक (अपनी) कोई न कोई कसर है ही। तब तक चैन नहीं लेना-लगे रहना।

– प.पू. पप्पाजी के पत्र में से

✡✡✡

તા. ૨૮-૭-૨૦૧૧

પૂ. નર્મદાશંકર શાસ્ત્રીજી

આશીર્વાદ...

મારી હૃદય વિવક્ષા

લગભગ ૫૦ વર્ષ પહેલાનું સ્મરણ કરી–
આજ સુધી **શ્રી સ્વામિનારાયણ** સંપ્રદાય સાથેનો મારો ઘનિષ્ઠ સંબંધ જળવાઈ રહ્યો છે,
તે પૂજ્ય સ્વામી **યોગીબાપાની** અમીદૃષ્ટિનો જ પ્રભાવ છે.
જ્યારે સંતોને સંસ્કૃતવિદ્યા ભણાવવાની યોગી સ્વામીજીએ ઇચ્છા કરી, તે વખતે હું જે સંસ્કૃત વિદ્યાલયમાં અધ્યાપન કરાવતો હતો ત્યાં શ્રી હર્ષદભાઈ દવે આવ્યા અને મને સ્વામીજી પાસે લઈ ગયા.
જન્માષ્ટમી બિલ્ડીંગમાં સ્વામીબાપાના આશીર્વાદથી ભણાવવાનું શરૂ કર્યું.
ત્યારબાદ જ્યાં જ્યાં સ્વામીજીનો મુકામ થાય ત્યાં ત્યાં હું અધ્યાપન માટે જતો હતો.
એક દિવસ સી.પી.ટૅન્કમાં મુરારબાગમાં સ્વામીજીનું પ્રવચન ચાલતું હતું;
તે સમયે તેઓએ આજ્ઞા કરી અને અમે ચારેક જણ–
શ્રી વિવેકસાગર, શ્રી ભક્તિપ્રિયદાસ (કોઠારી), શ્રી મુકુંદજીવનદાસ અને હું દાદર ગયા અને સ્વામિનારાયણ મંદિરનું બોર્ડ મૂકી ત્યાં અધ્યાપન શરૂ કર્યું.
યોગીબાપાએ કરામત કરી સુશિક્ષિત યુવાનો – જેમાં ડૉક્ટર, ઍંજિનિયર અને ગ્રેજ્યુએટો હતા, તેઓને સાધુની દીક્ષા આપી સંપ્રદાયનો એક ઉમદા હેતુ શરૂ કર્યો.
મારા ધારવા પ્રમાણે ૫૧ સંતો હતા.
તેઓએ ભારતીય વિદ્યાભવનનું કેન્દ્ર મંદિરમાં જ કરી પરીક્ષાઓ અપાવવાની શરૂઆત કરી.
મારી સાથે સંસ્કૃતના એક પ્રકાંડ વિદ્વાન સ્વ. મંછારામ શાસ્ત્રી પણ હતા.
સ્વામીબાપાના ફળદાયક આશીર્વાદે અધ્યયન અને અધ્યાપનનું એવું સુંદર વાતાવરણ ઊભું કર્યું કે આજે પણ એનું સ્મરણ ભૂલાતું નથી.
યોગીબાપા ધામ ગયા અને **પૂ. પ્રમુખસ્વામીએ** સંપ્રદાયનું (અક્ષરપુરુષોત્તમ) શાસન સંભાળ્યુ.
અનેક સંતોને દીક્ષા આપી અને વિશ્વમાં ૯૦૦ જેટલા મંદિરોનું નિર્માણ કરી એક અપૂર્વ યોજના કરી.
દિલ્હીમાં **'અક્ષરધામ'** બનાવી ધરતી પર એક અનોખું ધાર્મિક સ્થાન ઊભું કરી ભલભલાઓને આશ્ચર્યચકિત બનાવ્યા.
પૂ. પ્રમુખસ્વામીએ આ અક્ષરધામમાં શાસ્ત્રો અને પુરાણોની ગાથાઓને મૂર્તસ્વરૂપે બતાવી નાસ્તિકોને આસ્તિક બનાવ્યા એવું મારૂં માનવું છે.

બધાં જ સંપ્રદાયોમાં મતભેદો હોય છે, પરંતુ મનભેદો હોતા નથી.
જગદ્‌ગુરુ શ્રી આદ્ય શંકરાચાર્યે, કેવલાદ્વૈત હોવા છતાં,
પોતે રચેલા સ્ત્રોતો દ્વારા પંચાયત દેવોની ઉપાસના બતાવી છે.
ભારતમાં વિશિષ્ટાદ્વૈત, શુધ્ધાદ્વૈત જેવા સંપ્રદાયો તેમજ તેના અંતર્ગત ઉપસંપ્રદાયો છે,
પરંતુ તે બધાનું લક્ષ્ય પરમતત્ત્વને પામવાનું જ છે.
તેવી રીતે આ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય વિશિષ્ટાદ્વૈતનો જ પ્રકાર છે અને તે ભક્તિ સંપ્રદાય છે.
લગભગ ૨૦૦ વર્ષથી શરૂ થયેલો આ સંપ્રદાય શ્રી સહજાંદસ્વામીએ સ્થાપી સંપ્રદાયની પ્રવૃત્તિનો
પ્રચાર અને પ્રસાર શરૂ કર્યો. આ સંપ્રદાયની પ્રવૃત્તિ ગુજરાતમાં ઘણી સારી થઇ,
પરંતુ ઉત્તરભારતમાં પ્રવૃત્તિ ન હોવાથી ત્યાં પણ પ્રચાર અને સ્થાપના કરવી જોઈએ
એવો વિચાર ઘણાઓનાં મનમાં હતો. સમય જ સર્વોપરી હોવાને લીધે–
ઇ.૧૯૬૬માં અક્ષરપુરૂષોત્તમ સંપ્રદાયના બે વિભાગ થયા. આ એક દુઃખદ ઘટના બની.
બીજા વિભાગમાં પણ 'અક્ષરપુરૂષોત્તમની યુગલ ઉપાસના' જ છે.
આ વિભાગના મૂળ સૂત્રધાર **શ્રી દાદુભાઈ** એટલે **'કાકાજી'** અને બીજા **'પપ્પાજી'**એ
પૂર જોશમાં પ્રવૃત્તિ શરૂ કરી. સંતોમાં પણ ત્યારે ભાગ પડયા'તા. આ ઘટના દુઃખદ હતી.
પરંતુ યોગીબાપાને જ આરાધ્ય માની આ બન્ને પક્ષોએ ભક્તિને વેગ આપનારી પ્રવૃત્તિ ચાલુ કરી.
ઉત્તરભારતમાં આ સંપ્રદાયની પ્રવૃત્તિ ન હોવાથી
દાદુકાકાએ દિલ્હીમાં આવી ભાડે જગ્યા લઈ ત્યાં પ્રવૃત્તિ શરૂ કરી અને ત્યાં વસવાટ કરી
પંજાબ પ્રાંતને પણ આ સંપ્રદાયમાં લાવી,
ત્યાંના ઘણાં ભક્તોને આ સંપ્રદાયની ભાવના સમજાવી સંપ્રદાયના અનુયાયી બનાવ્યા.
હું અદ્વૈત હોવાં છતાં આ સંપ્રદાયનો હૃદયથી ચાહક છું.
અને તેને લીધે બન્ને વિભાગના સંતો મારું વારંવાર સન્માન કરે છે એ પણ મારું સૌભાગ્ય છે.
હરિધામમાં રહેલા શ્રી દાસસ્વામી મારી પાસે ઘણીવાર આવે છે
અને સોખડા આવવા આગ્રહપૂર્વક આમંત્રણ આપે છે.
એ **જ્યારે જ્યારે આવે ત્યારે હું મુકુંદજીવનસ્વામી વિશે સમાચાર પૂછતો**
કારણ કે 'મુકુંદજીવન' ઉપર શરૂઆતથી જ મારો સ્નેહભાવ હતો.
'હૃદયમેવ જાનાતિ પ્રીતિ યોગં પરસ્પરમ્' એ ઉક્તિ મુજબ તેમના પ્રેમે આ ગુરૂપૂર્ણિમાએ મને ત્યાં ખેંચ્યો.
તેમાં અહીં ઘાટકોપર રહેતા શ્રી અનીલભાઈ માણેકે પણ મને ત્યાં આવવાનો ઘણો આગ્રહ કર્યો
અને શ્રી મુકુંદજીવનદાસસ્વામીના ગુરૂત્વભાવના આશ્રયે રહેલા મંદિરમાં હું ગયો.
આ મંદિરનું ઠેકાણું –
'સ્વામિનારાયણ માર્ગ, કાકાજી લેન, તાડદેવ, અશોક વિહાર - ૩, દિલ્હી-૧૧૦ ૦૫૨ (ભારત)' છે.
ચાલીસ વર્ષથી દિલ્હીમાં રહેલા શ્રી મુકુંદજીવનદાસસ્વામીએ આ સંપ્રદાયને વેગ આપવા માટે

કેટલો પરિશ્રમ કર્યો છે એનો મને ખ્યાલ આવ્યો.
પત્થરની મૂર્તિમાં દેવની પ્રતિષ્ઠા કરી આપણે શ્રદ્ધા અને ભક્તિ દ્વારા દેવ પ્રત્યક્ષ છે
એમ માનીએ છીએ,
તેવી રીતે **સ્વામી મુકુંદજીવનદાસ 'દાદુકાકામાં એ પરમતત્ત્વ પ્રત્યક્ષ છે જ' એવો નિશ્ચય કરી હર ક્ષણે દાદુકાકાના સ્મરણથી જરાએ વિચલિત થતાં નથી.**
ઘણાં વર્ષો બાદ તેમને જોયા તો તેમની શક્તિનો પ્રભાવ મારા મનને ખૂબ જ સ્પર્શી ગયો.
ચાર-પાંચ દિવસ તેમના સત્સંગને જોયો અને સાંભળ્યો ત્યારે તેમના સ્વભાવનો સવિશેષ પરિચય થયો.
તેમનો સ્વભાવ ઉદાર, દયાનો ભંડાર, ભક્તો ઉપર પ્રેમ, ભક્તોના હૃદયના ભાવો પારખનાર, નીડર, હસી અને હસાવીને કામ કરાવવું, ભક્તોને આકર્ષવા માટેની એક અનોખી શક્તિ અને
આ બધું દાદુકાકાના જ પ્રભાવે થઈ રહ્યું છે એવું તેઓ તથ્ય સ્વરૂપે માને છે.
રોજનો કાર્યક્રમ નિયમિત ચાલે એવું કડક વલણ ધરાવનાર **શ્રી મુકુંદજીવનદાસસ્વામીને જોઈ આવો સમર્થ સંત મારો શિષ્ય છે એ જોઈ મને ખૂબ ખૂબ આનંદ થયો.**
આ **મંદિરથી થોડે દૂર 'અક્ષરજ્યોતિ'** નામે આ સંપ્રદાયના **મકાનમાં સાધ્વી બ્હેનોનો વસવાટ છે.**
ત્યાં મને લઈ જવામાં આવ્યો. ત્યાં 'મુકુંદજીવનદાસ'ના સાચા પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપવાળો કટ આઉટ જોઈ
ક્ષણવાર તો વિચારમાં પડયો કે અહીં ઓચિંતા ક્યારે આવ્યા ?
પરંતુ ત્યાંના સંચાલક ગુરૂતુલ્ય **આનંદી બ્હેને** સ્પષ્ટ કર્યું કે
આ કટ આઉટ દ્વારા એઓ અમારી સામે પ્રત્યક્ષ છે એમ અમે માનીએ છીએ.
ત્યાં પણ પંદરેક બ્હેનો આ સંપ્રદાયનો સત્સંગ નિયમિત વાંચન કરી
જીવનને ગુરુજી શ્રી મુકુંદજીવનદાસના ચરણોમાં સમર્પણ કરી,
લોકસેવાની ભાવનાને જ હૃદયમાં રાખી, અક્ષરજ્યોતિમાં જીવન વિતાવે છે.
હું આ બધું જોઈ ભાવવિભોર બન્યો. મને ફરીવાર દિલ્હી આવવા આમંત્રણ આપ્યું છે.
હવે તો સમય જ બળવાન હોવાથી જે સમયે જે થશે તે પ્રમાણે અનુસરીશ.
આટલું લખીને પૂર્ણ કરવા પહેલાં મારે જણાવવું છે કે **પ્રમુખસ્વામીની દેખભાળમાં રહેલા બધાં સંતો સમર્થ પ્રભાવવાળા છે અને તેઓ પણ મારા તરફ ગુરુભાવ રાખીને સન્માન કરે છે.**
મને આપેલી **'ભગવત્કૃપા'**ની પ્રતો જોઈ.
આ પત્રિકાઓ પણ આ જ સ્વરૂપમાં સંપ્રદાયની ભક્ત બની બીજાઓને આકર્ષવા પ્રયત્નશીલ છે.
આટલું લખી 'જય સ્વામિનારાયણ' સાથે **શ્રી મુકુંદજીવનસ્વામીને શુભાશીષ આપું છું કે —**
તેઓ સો વર્ષ પર્યન્ત સેવા કરી આ સંપ્રદાયને સતેજ કરી મહાસંતની કીર્તિ પ્રાપ્ત કરી
જીવનને ધન્ય બનાવે એ જ પ્રભુ પાસે પ્રાર્થના.

નર્મદાશંકર શાસ્ત્રી
જય સ્વામિનારાયણ સાથે
શુભાશીર્વાદ

[पू. नर्मदाशंकर शास्त्रीजी के आशीर्वाद का हिन्दी अनुवाद]

मेरी हृदय विवक्षा

तकरीबन ५० साल पहले का याद करुँ तो–

आज तक **श्री स्वामिनारायण** संप्रदाय के साथ मेरा जो घनिष्ठ संबंध बना रहा है,

वह पूज्य स्वामी **योगीबापा** की अमृतदृष्टि का ही प्रभाव है।

जब योगीस्वामिजी ने संतों को संस्कृतविद्या पढ़ाने की इच्छा प्रकट की, उस समय मैं संस्कृत विद्यालय में जहाँ पढ़ा रहा था, वहाँ हर्षदभाई दवे आए और मुझे स्वामिजी के पास ले गए।

स्वामीबापा के आशीर्वाद से जन्माष्टमी बिल्डिंग में पढ़ाना शुरू किया।

उसके बाद जहाँ-जहाँ स्वामिजी ठहरते थे, वहाँ-वहाँ मैं पढ़ाने के लिए जाता था।

एक दिन सी.पी. टेन्क में मुरार बाग में स्वामिजी का प्रवचन चल रहा था;

उस समय उन्होंने मुझे आज्ञा दी और हम चार जने–

श्री विवेकसागर, श्री भक्तिप्रियदास (कोठारी), श्री मुकुंदजीवनदास और मैं दादर गए

और वहाँ स्वामिनारायण मंदिर का बोर्ड रख कर अध्यापन शुरू किया।

योगीबापा ने करामात से सुशिक्षित युवकों–जिसमें डॉक्टर, इंजीनियर और ग्रेज्युएट थे,

को साधु की दीक्षा देकर संप्रदाय का एक उत्तम हेतु शुरू किया। मेरे ख्याल से ५१ संत थे।

उन्होंने मंदिर में ही भारतीय विद्याभवन का केन्द्र बना कर परीक्षाएँ देनी शुरू कीं।

मेरे साथ संस्कृत के एक प्रकांड विद्वान स्व. मंछाराम शास्त्री भी थे।

स्वामीबापा के फलदायी आशीर्वाद से अध्ययन और अध्यापन का ऐसा सुंदर माहौल

बना था कि आज भी वे स्मृतियाँ भुलाई नहीं जातीं।

योगीबापा धाम गए और **पू. प्रमुखस्वामी** ने संप्रदाय का (अक्षरपुरुषोत्तम) शासन संभाला।

अनेक संतों को दीक्षा दी और विश्व में लगभग ९०० मंदिरों का निर्माण करके एक अपूर्व योजना पूर्ण की।

दिल्ली में **'अक्षरधाम'** बना कर धरती पर एक अनोखे धर्मस्थल का सर्जन कर

बड़ों-बड़ों को अचंभे में डाल दिया है।

पू. प्रमुखस्वामी ने इस अक्षरधाम में शास्त्रों और पुराणों की गाथाओं को मूर्तस्वरूप में दिखा कर

नास्तिकों को आस्तिक बनाया है–ऐसा मेरा मानना है।

सभी संप्रदायों में मतभेद होते हैं, परंतु मनभेद नहीं।

जगद्‌गुरु श्री आद्य शंकराचार्य ने केवलाद्वैत होने के बावजूद,

खुद रचे हुए शास्त्रों द्वारा पंचायत देवों की उपासना बताई है।

भारत में विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत जैसे संप्रदाय और उनके उपसंप्रदाय हैं,

परंतु उन सभी का लक्ष्य परमतत्त्व को पाना ही है।

यह स्वामिनारायण संप्रदाय भी विशिष्टाद्वैत का ही एक प्रकार है और भक्ति संप्रदाय है।
करीब २०० साल से शुरू हुआ यह संप्रदाय श्री सहजानंदस्वामी ने स्थापित करके संप्रदाय की प्रवृत्ति का प्रचार और प्रसार शुरू किया। इस संप्रदाय की गुजरात में बहुत अच्छी प्रवृत्ति हुई,
परंतु कइयों के मन में विचार था कि उत्तरभारत में प्रवृत्ति न होने के कारण
वहाँ भी स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रचार और स्थापना करनी चाहिए
समय ही सर्वोपरि होने के कारण–
सन् १९६६ में अक्षरपुरुषोत्तम संप्रदाय के दो विभाग हुए। यह एक दुःखद घटना बनी।
दूसरे विभाग में भी 'अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना' ही है।
इस विभाग के मूल सूत्रधार **श्री दादुभाई 'काकाजी'** और दूसरे **'पप्पाजी'** ने
जोर-शोर से प्रवृत्ति शुरू की। संतों में भी तब विभाजन हुआ। यह घटना दुःखद थी।
परंतु योगीबापा को ही आराध्य मान कर इन दोनों पक्षों ने भक्ति को वेग देने वाली प्रवृत्ति शुरू की।
उत्तरभारत में इस संप्रदाय की प्रवृत्ति न होने के कारण
दादुकाका ने दिल्ली में आकर किराए की जगह लेकर वहाँ प्रवृत्ति शुरू की और वहाँ रहते हुए
पंजाब प्रांत को भी इस संप्रदाय से जोड़ कर,
वहाँ के कई भक्तों को इस संप्रदाय की भावना समझा कर, संप्रदाय का अनुयायी बनाया।
अद्वैत होने के बावजूद मैं इस संप्रदाय का हृदय से चाहक हूँ।
इसी वजह से दोनों विभाग के संत मेरा बार-बार सम्मान करते हैं, यह भी मेरा सौभाग्य है।
हरिधाम में रहते श्री दासस्वामी मेरे पास कई बार आते हैं
और सोखड़ा आने के लिए आग्रहपूर्वक आमंत्रण देते हैं।
वे **जब-जब आते, मैं मुकुंदजीवनस्वामी के बारे में खबर पूछता था**
क्योंकि 'मुकुंदजीवन' के प्रति शुरुआत से ही मेरा स्नेहभाव था।
'हृदयमेव जानाति प्रीति योगं परस्परम्'
इस उक्ति के मुताबिक उनके प्रेम ने इस गुरुपूर्णिमा पर मुझे वहाँ खींचा।
उसमें भी यहाँ घाटकोपर में रहते श्री अनिलभाई माणेक ने भी मुझे वहाँ आने का खूब आग्रह किया
और मैं श्री मुकुंदजीवनदासस्वामी के गुरुत्वभाव में रहे मंदिर में गया।
इस मंदिर का पता–
'ताड़देव, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-३, दिल्ली-११० ०५२ (भारत)' है।
चालीस वर्ष से दिल्ली में रहते श्री मुकुंदजीवनदासस्वामी ने इस संप्रदाय को गति देने के लिए कितना परिश्रम किया है उसका मुझे ख्याल आया।
पत्थर की मूर्ति में देव को प्रतिष्ठित करके, उसमें देव प्रत्यक्ष हैं ऐसा हम श्रद्धा और भक्ति से मानते हैं,
उसी प्रकार **स्वामी मुकुंदजीवनदास 'दादुकाका में यह परमतत्त्व प्रत्यक्ष है ही' ऐसी दृढ़ निष्ठा से**

किसी भी क्षण दादुकाका के स्मरण से तनिक भी विचलित नहीं हुए हैं।
कई वर्षों के बाद उन्हें देखा तो उनकी शक्ति का प्रभाव मेरे मन को खूब स्पर्श कर गया।
चार-पाँच दिन उनके सत्संग को देखा और सुना, तो उनके स्वभाव का विशेष परिचय हुआ।
वे स्वभावतः उदार, दया के भंडार, भक्तों के प्रति प्रेम रखने वाले
और
उनके हृदय के भावों की परख रखने वाले, निडर, सहृदय संत हैं
एवं
हँसते-हँसाते काम करवाने और भक्तों को आकर्षित करने की अद्‌भुत क्षमता से संपन्न हैं।
यह सब दादुकाका की कृपादृष्टि से हो रहा है, ऐसा वे तथ्य स्वरूप में मानते हैं।
रोज का कार्यक्रम सुचारु रूप से चले ऐसी शिस्त अपनाए हुए **श्री मुकुंदजीवनदासस्वामी जैसा समर्थ संत मेरा शिष्य है, यह देख कर मुझे खूब-खूब आनंद हुआ।**
इस **मंदिर से थोड़ी दूरी पर 'अक्षरज्योति'** नाम के इस संप्रदाय के भवन में साध्वी बहनों का निवास है।
वहाँ मुझे ले जाया गया। वहाँ 'मुकुंदजीवनदास' का सच्चा प्रत्यक्ष स्वरूप वाला कट आऊट देख कर
क्षणभर तो मैं अचंभे में पड़ गया कि यहाँ अचानक कब आए?
परंतु वहाँ की संचालक गुरुतुल्य **आनंदी बहन** ने स्पष्ट किया कि
इस कट आऊट द्वारा वे हमारे समक्ष प्रत्यक्ष हैं, ऐसा हम मानते हैं।
वहाँ भी पंद्रह के लगभग बहनें इस संप्रदाय के सत्संग का नियमित अध्ययन करते हुए
जीवन को 'गुरुजी' श्री मुकुंदजीवनदास के चरणों में समर्पित करके,
लोकसेवा की भावना को ही हृदय में रख कर, अक्षरज्योति में जीवन बिताती हैं।
यह सब देख कर मैं भावविभोर हुआ। मुझे दोबारा दिल्ली आने का आमंत्रण दिया है।
पर, समय ही बलवान है, सो जब जो कर पाऊँगा उसके मुताबिक करूँगा।
इतना लिख कर समाप्ति करने से पहले मैं कहना चाहूँगा कि **प्रमुखस्वामी की देखभाल में रहे हुए सभी संत समर्थ प्रभाव वाले हैं और वे भी मेरी ओर गुरुभाव रखते हुए सम्मान करते हैं।**
मैंने मुझे दी गई **'भगवत्‌कृपा'** की प्रतियाँ देखीं।
ये पत्रिकाएँ भी इसी स्वरूप में संप्रदाय की भक्त बन कर अन्यों को आकर्षित करने के लिए प्रयत्नशील हैं।
इतना लिख कर 'जय स्वामिनारायण' के साथ **श्री मुकुंदजीवनस्वामी को शुभाशीष देता हूँ कि– वे सौ वर्ष तक सेवा करते हुए इस संप्रदाय को सतेज करके महासंत की कीर्ति प्राप्त करके जीवन को धन्य बनाएँ**–यही प्रभु सम्मुख प्रार्थना।

नर्मदाशंकर शास्त्री
जय स्वामिनारायण सह
शुभाशीर्वाद

✡✡✡

स्वामिश्रीजी

सौरभ - ३७

भगवत् कृपा में 'सौरभ' स्तंभ में कई मुक्तों ने अपने अनुभवों द्वारा प.पू. गुरुजी की साधुता-आत्मीयता एवं प्रभुता का परिचय दिया और उनके प्रति अपनी भक्ति अदा की। इसे पढ़ कर खूब प्रसन्नता होती है और मन में विचार उठता है कि प.पू. गुरुजी द्वारा मुझे भी जो अनुभव हुए, उन्हें व्यक्त करूँ। सो, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से प्रार्थना करके यतकिंचित् प्रयास कर रहा हूँ।

मैं १९७६ में प.भ. नवीनभाई के संबंध से प.पू. गुरुजी के संपर्क में आया। दिल्ली में कमला नगर निवासी स्व. प.भ. प्राणलालभाई दोषी के यहाँ मैं नौकरी करता था। उनके सुपुत्र प.भ. नगीनभाई बीमार थे, सो उन्हें देखने के लिए प.पू. गुरुजी उनके यहाँ आए थे। वहाँ मैंने सर्वप्रथम प.पू. गुरुजी के दर्शन किए। सुबह करीब नौ बजे का समय था, प.पू. गुरुजी के दर्शन करके मन में खूब ही आनंद और शांति की अनुभूति हुई। तब प.पू. गुरुजी ने मुझे जो शब्द कहे थे, वे आज भी मुझे अच्छी तरह याद हैं– *आओ-आओ, सेठ!* प.भ. प्राणलालभाई एक सात्त्विक और दैवी अंश के व्यक्ति थे, सो यह सुन कर उन्होंने प.पू. गुरुजी से कहा– *यह लड़का हमारे ऑफिस में काम करता है। परंतु अब आपके आशीर्वचन से सेठ हो जाएगा।* यूँ, आज मैं जो कुछ भी हूँ, वो प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद से ही हूँ। सहज ही भजन की यह पंक्ति याद करता हूँ– *कमाल है गुरुजी आए मेरे जीवन में...*

प.पू. गुरुजी के साथ का सफ़र बहुत लंबे समय से रहा है। प.पू. गुरुजी के बारे में जितना कहूँ या लिखूँ, उससे उनका यथार्थ उल्लेख हो ही नहीं सकता। शब्दों से परे उनकी महिमा है। हमारे जीवन के उत्थान के लिए उन्होंने जो कुछ भी किया है, उससे उनका परिचय करवाना, बहुत ही 'लघु' बात है। सच, गुरुजी ऐसे भक्तवत्सल हैं कि कितने हरिभक्तों की बात कहें और कौन-कौन सी बातें कहें... जैसे प.पू. गुरुजी रामायण का एक प्रसंग समझाते हुए बताते हैं कि सीताजी से जब किसी ने पूछा कि आपके पति कौन-से हैं? तब उन्होंने रामजी के साथ खड़े लक्ष्मणजी का परिचय देते हुए उत्तर दिया कि *जो उजले हैं, वे मेरे देवर हैं।* अर्थात् रामजी का परिचय न देते हुए लक्ष्मणजी का दिया। कारण कि वास्तव में प्रभु का निर्देश तो शब्दों द्वारा कैसे करें?

पर, मेरे जीवन के कुछ मार्मिक प्रसंग जो मेरे मन को खूब छू गए, उन पर प्रकाश डालते हुए प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने का मैं अल्प प्रयास कर रहा हूँ...

मेरी शादी १३ मई सन् १९७७ को हुई। प.भ. नवीनभाई के साथ मित्रता के कारण मेरा अंग सेवा का रहा। दिल्ली में अप्रैल सन् १९८१ में श्रीजी महाराज की द्विशताब्दी मनाने का तै हुआ था। उस समय सभी प्रकार के आयोजन में मैं, प.भ. नवीनभाई, प.भ. जनार्दनभाई, प.भ. हरीषभाई, प.भ. दालिया साहेब इत्यादि सभी का सहयोग था। उस समय समाज छोटा होने के कारण जो भी सेवा सौंपी गई होती, उसमें सभी एक जोश से जुट जाते थे। आज भी उस समय की सेवाएँ भुला नहीं पाता, जिसके कारण कई बार मैं प.पू. गुरुजी की दृष्टि में बना रहा, पर यह उनकी करुणा ही कहूँगा।

मेरी शादी के पाँच वर्ष तक हमें कोई शिशु नहीं हुआ था। ताड़देव के नवयोगेश्वरों में से एक पू. रमेशभाई

सोनी, पू. दीदी और कई मुक्तों ने अकसर प.पू. गुरुजी से प्रार्थना की कि इनके यहाँ झूला बंधे और... उनकी कैसी करुणा और आशीर्वाद का कमाल कि पू. अभिषेक जैसे बालक का हमारे यहाँ जन्म हुआ। उनकी यह कृपा मैं कैसे भूलूँगा और दूसरी कृपा तब हुई, जब दूसरे पुत्र हृदय का जन्म हुआ। और तो और दोनों की जन्मतिथि ब्रह्मस्वरूप काकाजी से जुड़ी हुई आई। अभिषेक का जन्म १९८३ में २६ जनवरी के ऐतिहासिक दिन हुआ। जब १९८६ में प.पू. काकाजी ने 'गुणातीत ज्योत' के प्रांगण में गुणातीत समाज को अंतिम आशीर्वाद के रूप में 'मेग्नाकार्टा' दिया! तो, अनुज हृदय का जन्म ३ फरवरी १९८५ को हुआ। ३ फरवरी तो प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन–गुणातीत समाज की स्थापना का दिन! वैसे भी वे दोनों सत्संग के माहौल में ही पले, खेले और कब बड़े हो गए, हमें पता भी नहीं चला।

जब मैं प.पू. गुरुजी के संपर्क में आया, तब मेरी आर्थिक स्थिति बड़ी ही पतली थी। नौकरी करते हुए काफ़ी समय गुज़र गया। यह बात १९८८-८९ की है कि अंततः प.पू. गुरुजी ने खूब जोर देते हुए मुझे कहा–*तू अपना काम क्यों नहीं कर लेता?* मैंने कहा–*गुरुजी, घर खर्च के लिए भी पैसे नहीं हैं, तो काम कैसे करूँगा?* तब प.पू. गुरुजी ने मुझसे कहा– *घर चलाने के लिए तुझे कब तक पैसे चाहिए होंगे?* मैंने कहा–*गुरुजी, कम से कम छः महिने तक तो चाहिए ही।* फट् से प.पू. गुरुजी ने कहा–
शारदा से कहना एक वर्ष तक घर खर्च के पैसे हम से ले जाए और तुम्हारे पास जब आ जाएँ, तब मुझे दे देना। परंतु अपना काम शुरू कर, मैं बैठा हूँ।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की भक्तों के प्रति भक्तवत्सलता और आत्मीयता के प्रसंग सुनते हैं, पर साक्षात् गुणातीत (संत) हमें जीवन में प.पू. गुरुजी के रूप में मिले हैं। तकरीबन तीन-चार महीने ही हमने घर खर्च के रुपये प.पू. गुरुजी से लिए होंगे। उनके संकल्प में कैसी ताक़त होगी कि उसके बाद कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखना पड़ा। व्यापार में भले ही कई बार उतार-चढ़ाव आए, परिस्थितियाँ हमेशा एक जैसी भी नहीं रहीं, परंतु प.पू. गुरुजी का सान्निध्य सदैव मुझे ऊर्जा देता रहा।

१९९७ के अंत में मेरा काम-काज फला-फूला। तब व्यापार के हेतु से मैंने ऑफिस लेने का सोचा। चाँदनी चौक में किसी के साथ मिल कर एक प्लॉट लिया और उस पर करीब ढाई मंजिल बनवाया। ऑफिस तैयार हो जाने के बाद वहाँ बैठने से पूर्व ही एक रात किसी ने ऑफिस के ताले तोड़ कर छोटा-मोटा बिजली का सामान चोरी कर लिया। उसी दौरान हार्ट का ऑपरेशन करवाने के बाद प.पू. गुरुजी १९९८ फरवरी में मुंबई से दिल्ली लौटे। मैंने सारी बात उन्हें बताई, तो उन्होंने कहा कि पू. दीदी को ऑफिस ले जाना। फिर वे जैसा कहें, वैसा करना।

पू. दीदी बहनों के साथ वहाँ आईं, पूरी जगह देखी। जगह उन्हें पसंद भी आई, लेकिन उनमें मानो महाराज विराजमान थे कि उन्होंने मुझसे कहा–*भैया, अपने यहाँ कोई चीज सहज नहीं बनती। आगे हमारी कोई बड़ी हानि होने वाली होगी, महाराज ने ही इशारा दिया होगा। अभी आप साल-दो साल यहाँ नहीं बैठो तो? आस-पास थोड़ा मार्किट डॅवेलप हो जाए, तब सोचेंगे। तब तक कुछ और सोचते हैं।* मैंने 'हाँ' की कि आप जैसे कहो, वैसे ही करूँगा। परंतु मेरे मन में ऐसी उथल-पुथल थी कि वर्णन नहीं कर सकता। उस समय चाँदनी

चौक में दूसरी जगह मिलनी कठिन थी। उसी दौरान प.पू. गुरुजी ने पुनः कहा कि और कोई जगह ढूँढो तो सही। मैं प्रयास करता रहा, तब किसी ने दूसरी मंजिल पर एक छोटा-सा ऑफिस बताया। मैंने प.पू. गुरुजी से उसके बारे में बात की। तुंरत ही वे बोले कि *आज मिलता हो, तो कल नहीं करना और अभी मिलता हो, तो आज नहीं बीतने देना; तुरंत ले लो और पैसे नहीं हो, तो मुझ से ले जाना।*

प.पू. गुरुजी के कहे अनुसार मैंने वैसे ही किया। उस समय मेरे पास कुछ भी नहीं था, सौ प्रतिशत लोन और पुराने ऑफिस के लिए हुए पैसों से सारा जुगाड़ कर लिया। पुराना ऑफिस को बेच के नए ऑफिस का लोन चुकाने के बारे में सोचा था। लेकिन हालात कुछ ऐसे बिगड़े थे कि पुराना ऑफिस बिक नहीं रहा था। अब सवाल था कि लोन कैसे चुकाऊँ? प.पू. गुरुजी को मेरी परिस्थिति का तो ख्याल था ही। मैं हताश हो चुका था। भक्तवत्सल प.पू. गुरुजी ने मेरा चेहरा पढ़ लिया और मुझ पर करुणा करके कहा– *तू ऐसा कर एक महीने तक रोज सुबह 'महापूजा' में आना शुरु कर, महाराज उपायभूत होंगे ही।* मैंने 'महापूजा' में आना शुरू किया। पहले ही दिन महापूजा एटेन्ड करने के बाद मैं चाँदनी चौक किसी काम से गया। वहाँ चाय की दुकान पर एक परिचित ने वैसे ही मज़ाकिया लहज़े से कहा– *आज आपका ऑफिस बेच दूँ?* मुझे हुआ ये सब मज़ाक उड़ाने वाले हैं, वैसे ही बोलते होंगे। फिर भी मैंने फोन पर प.पू. गुरुजी से बात की। उन्होंने मुझे कहा कि तू दोबारा उसके पास जा और कहना कि हमारे गुरुजी ने कहा है कि आज ही नहीं, अब ही यह काम करो। प्रभु का करिश्मा देखा कि वह व्यक्ति दो घंटे में ही एक मुस्लिम बहनजी को ग्राहक के रूप में ले आया। कुछ बातचीत हुई, खींचा-तानी हुई। मैं तो मन ही मन भजन ही करता रहा कि महाराज आप कृपा करो कि यह सौदा किसी भी तरह हो जाए; क्योंकि मैं बहुत ही दुःखी था। इस दौरान प.पू. गुरुजी से निरंतर संपर्क में भी रहा। अंततः प.पू. गुरुजी ने बेड़ा पार करवाया। मेरे दिलोदिमाग़ से ऐसा बोझ उतरा, मानो कैन्सर जैसी भयानक बीमारी से मेरा पिंड छूटा हो।

ऐसे प्रसंगों से ख्याल पड़ता है कि कैसे समर्थ प.पू. गुरुजी हमें मिले हैं। यूँ महापूजा में कितने ही भक्तों के लिए वे संकल्प करते हैं। तब प.पू. काकाजी द्वारा प.पू. गुरुजी को दिए आशीर्वाद सहज याद आते हैं– **'तुम्हारे संकल्प में अमोघ बल है।'** आप पल में चाहे वो कर सकते हो।

सच, प.पू. गुरुजी ने आज किसी भी प्रकार से कहीं लाचारी नहीं रखी है। पू. अभिषेक तो प.पू. गुरुजी की सेवा में है ही। हृदय की शादी उनकी कृपा से एक मिसाल ही बनी। हृदय के ससुर पू. महेशजी स्वामिनारायण संप्रदाय से परिचित नहीं थे, परंतु वे भी प.पू. गुरुजी के सिर्फ दर्शन से खूब निश्चिंत हुए और आज हमें अ.सौ. ईशा एक बहु नहीं, बल्कि बेटी मिली है।

अनुभव लिखने बैठूँ तो शायद कहीं अंत ही न आए। पर, इतना कहते हुए विराम करूँगा कि प.पू. गुरुजी के साथ उत्तरोत्तर हमारा संबंध सदैव अटूट बना रहे और उसी चाहना में हमारे प्राण छूटें –यही प्रार्थना। केवल धन्यवाद! धन्यवाद! धन्यवाद के अलावा कुछ न कहें।

– बच्छराज वर्मा, दिल्ली

✡✡✡

सौरभ - ३८

स्वामिश्रीजी

१३ मार्च, १९८५ – प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन के मंगलकारी दिन प.पू. गुरुजी के प्रथम दर्शन किए थे। मंदिर के निकट सत्यवती कॉलोनी के आर्यसमाज मंदिर में प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन मनाया जा रहा था। अपने परिवार वालों के साथ मैं मंदिर में जैसे ही दाखिल हुई कि सबसे पहले प.पू. दीदी के दर्शन हुए। पहली मुलाकात में ही प.पू. दीदी ने जिस प्रकार 'जय स्वामिनारायण' किया, ऐसा लगा मानो वे हमें पहले से ही जानती हों। प.पू. दीदी से मिलने के बाद परिवार के साथ जैसे-जैसे मंदिर के अंदर गई और प.पू. गुरुजी के दर्शन किए और... वैसे-वैसे मेरे मन के विचार बदलते गए!

तत्पश्चात् परिवार के साथ अकसर मेरा मंदिर आना-जाना लगा रहता। परिवार गाज़ियाबाद के नज़दीक ढूँढाहेड़ा गाँव में रहता था। जब भी प.पू. काकाजी दिल्ली आते, तो हम दर्शन करने के लिए दिल्ली मंदिर आ जाते। मुझे बचपन से दमा की तकलीफ है। १९८५ की दिसंबर में प.पू. काकाजी दिल्ली आए हुए थे; मैं उनके दर्शन करने के लिए दिल्ली आई और सौ. मधुजीजी के घर प.पू. दीदी के साथ रुकी थी। अचानक एक दिन दोपहर को मुझे अस्थमा का एटैक हुआ। मंदिर में प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी को पता चला, तो प.पू. काकाजी सौ. मधुजीजी के घर मुझे देखने आए और आशीर्वाद दिए– *इस बेबी का आख़िरी जन्म हो गया।* फिर जनवरी १९८६ गुणातीत द्विशताब्दी के उत्सव के समय प.पू. दीदी के साथ जब मैं गुजरात गई, तो वहाँ प.पू. काकाजी ने मुझसे कहा– *बेबी, तू भगवान भजना। भगवान भजेगी तो तेरी तबियत अच्छी रहेगी। अगर शादी करेगी तो डंडे पडेंगे।* प.पू. काकाजी ने तो मुझे इतनी बड़ी बात कह दी, जबकि भगवान भजना क्या होता है, गुरु क्या होते हैं, कैसे होते हैं या जिदंगी में उनका क्या महत्त्व है – इन सब बातों का तो मुझे तनिक भी ख्याल नहीं था। पर, प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी की कृपा से ऐसे संजोग बनते गए और मैं प.पू. दीदी की निश्रा में कब भगवान भजने आ गई, मुझे पता ही नहीं चला। धन्यवाद प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी को कि पूरे गाँव में, अरे! परिवार से उन्होंने मुझे भगवान भजने के लिए चुना। भगवान भजना क्या होता है, उसका तो ख्याल भी नहीं था, परंतु **अगर प.पू. दीदी को मैंने मंदिर में नहीं देखा होता, तो मैं कभी भगवान भजने नहीं आ सकती थी।**

भगवान भजने के लिए प.पू. दीदी के पास आने के बाद रोज़ ही प.पू. गुरुजी के दर्शन का सुख तो मिलता ही, पर इसके अलावा चौबीस घंटे प.पू. गुरुजी ही मेरे दिल और दिमाग़ पर छाए रहते। अन्य कुछ भी सूझता नहीं था। प.पू. दीदी के साथ प.भ. विजयबाबु-सौ. मधुजीजी के घर रहते थे। तब उनके घर के दरवाजे को कोई खटखटाता, तो ऐसा होता कि कहीं प.पू. गुरुजी तो नहीं आए होंगे। सोती तो स्वप्न में प.पू. गुरुजी ही दिखते। मंदिर जाने के लिए निकलती तो रास्ते में प.पू. गुरुजी चारों ओर दिखाई देते। यूँ हर जगह प.पू. गुरुजी ही नज़र आते। भीतर में अलग प्रकार का सुख महसूस होता। किताबों में पढ़ा था कि गोपियाँ श्री कृष्ण के पीछे पागल थीं, लेकिन वैसा आनंद तो मैं अपने भीतर अनुभव करती थी। एक बार तो प.पू. काकाजी ने कहा भी था

कि ये बेबी कृष्ण के समय की गोपी है। तब मुझे ख्याल पड़ा कि गोपियों की भाँति ही मैं प.पू. गुरुजी की स्मृतियों में क्यों सराबोर रहती हूँ। इससे भी अधिक प.पू. दीदी ने अंतर्यामी रूप से कहो या प.पू. काकाजी की बात का मर्म समझते हुए मेरा नाम 'गौरी' रखा। बाद में तो प.पू. गुरुजी की बातों से ख्याल पड़ा कि ऐसे संत अंतःकरण पर छा जाने के बाद हमारे भीतर के दोष-स्वभावों का शुद्धिकरण करना शुरू कर देते हैं... ए-१०३ के मंदिर में दो सूत्र लिखे हुए थे–

✻ गलती कोई करे, डाँट हमें खानी और ऊपर से माफ़ी मांगनी; यह है गुणातीत के सेवक की रीति।

✻ धर्म के बंधन, बंधन नहीं बल्कि मुक्ति के साधन हैं।

ये दो सूत्रों ने तो मेरे विचारों को पूरा ही बदल दिया था। मैंने सोचा कि इतना-सा करने में मुक्ति व मोक्ष की प्राप्ति होती है, तो कोई मुश्किल बात नहीं है। प्रसंग पर एहसास होने लगा कि हम यदि ऐसा सोचें कि हमारी समझदारी है या यह काम मैंने किया, ऐसा कुछ भी नहीं है। प.पू. गुरुजी ही बल-बुद्धियोग देकर सेवा करवा लेते हैं।

प.पू. गुरुजी का दिल बहुत विशाल है। हँसते-हँसते सब की परवरिश करते हैं। सामने वाले को तनिक भी यह महसूस नहीं होने देते कि बोझ बने हैं। **ऐसे संत किसी की सेवा ऐसे ही नहीं जाने देते।** थोड़ी-सी सेवा बहुत अधिक मानते हैं। **हमें लगता है कि प.पू. गुरुजी मंदिर में खाली ही बैठे हैं, ऐसा नहीं है। वे तो सभी भक्तों की रक्षा में पूरे ब्रह्मांड में विचरण करते हैं।** यूँ प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी पल-पल मेरे साथ-मेरी रक्षा में हैं, ऐसा मैंने भी महसूस किया है...

हे गुरुजी, मैं आपकी ऋणी हूँ। जब भी मैं स्वभाव की परेशानियों में से गुज़री हूँ, तब आपने हर प्रकार से मेरी परवरिश की है। आपने मुझे प.पू. दीदी की निश्रा में रख दिया, मैं अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली मानती हूँ। आपका यह ऋण कई जन्मों तक भी नहीं उतार पाऊँगी। तो, प.पू. काकाजी जैसे कहते कि और कुछ हो न हो, बस मूर्ति सिद्ध कर लो। बस, हे काकाजी-हे गुरुजी जीतेजी मूर्ति सिद्ध करवा देना और जैसा आप बनाना चाहते हैं, वैसा बना देना। हे गुरुजी आप बहुत इन्टेलीजेन्ट हो; प.पू. काकाजी को कोटि-कोटि धन्यवाद कि आपके जोग में मुझे रख दिया...

हे गुरुजी! आपने तो मेरे लिए बहुत कुछ किया है, पर अब आप जो मुझ से करवाना चाहते हैं, वो मैं कर पाऊँ; मेरी ओर से आपको ठंडक दे पाऊँ। आपको पाकर जैसा मुझे गर्व है कि मुझे इतने अच्छे गुरुजी मिले हैं, वैसा गर्व आपको मुझ पर हो जाए–यही सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में दिल से प्रार्थना है।

प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी हम सबके बीच में सालों तक रह कर हमें मार्गदर्शन देते रहें–ऐसी प.पू. काकाजी के श्रीचरणों में प्रार्थना है।

– साध्वी गौरी, अक्षरज्योति

✡✡✡

सौरभ - ३९

મારા ગુરૂજી, મારી નજરે...

પ.પૂ. ગુરૂજી માટે લખવા બેસું છું ત્યારે ભજનની એક લીટી યાદ આવે છે - 'મૈં તો નહીં હૂँ કાબિલ, તેરા પાર કૈસે પાઉં, ટૂટી હુઈ વાણી સે, ગુણગાન કૈસે ગાઉં...' મને આધ્યાત્મિક વાતો કરતા કે લખતા નથી આવડતી, પરંતુ પ.પૂ. ગુરૂજીનું જીવન જેવું મેં મ્હારી બાળક દૃષ્ટિએ જોયું છે એ લખવાની હિંમત કરૂં છું.

સહુથી પ્હેલાં તો કોઈ મને એમ પૂછે કે તું ભગવાન ભજવા કેવી રીતે આવી? એનો જવાબ મ્હારે શું આપવો એ વિચાર જ કરતી રહી જઉં છું; કેમકે મને પોતાને જ નથી ખબર કે હું ભગવાન ભજવા કેવી રીતે આવી? નાનપણમાં જ પ.પૂ. ગુરૂજી વિષે એક એવું હેત થઈ ગયું કે એમના વગર રહી શકાય જ નહીં. એવું બી ન્હોતું કે એમની સાથે હેત થતાં જ જગત સાવ ખારૂં થઈ ગયું હોય. ઘણાં શોખ હતા... નખરા હતા... અરે! હજુ ય છે. હું સ્વભાવે બી ખૂબ ચંચળ...મને જોઈને જે સત્સંગીઓ હતા ને મને મંદિરમાં જોતા હતા એમને તો એવું હતું કે મોટી થઈને આ ભગવાન ભજશે, પણ હું જ્યાં રહેતી હતી એ 'ગુજરાત એપાર્ટમેન્ટ્સ'માં, બધાં એમ કહેતાં કે આની મોટી બેન તો ત્યાં રહી શકી એવી છે, પણ આ તો ૬ મહીનામાં પાછી આવી જશે...આ ત્યાં રહે એવી નથી! હું ૧૦ વર્ષની હતી ત્યારે મને કોઈએ પૂછેલું કે ગુરૂજી તારા શું છે? અને મેં જવાબ આપલો– **લાઈફ પાર્ટનર!** 'લાઈફ પાર્ટનર' કોને કહેવાય ત્યારે એ ખબર પણ ન્હોતી અને એનો અર્થ પણ હું ન્હોતી જાણતી. પણ, જ્યારે મેં દીક્ષા લીધી ત્યારે મહારાજની મૂર્તિ પાસે એક બોર્ડ હતું –

'હથેવાળો હરિ સંગાથે મેં કીધો રે, ભૂમાનંદ કહે જન્મ સૂફળ કરી લીધો રે!'

અને... **પ.પૂ. ગુરૂજીની આ માટે હું ખૂબ ઋણી છું કે મને અહીંયા - અક્ષરજ્યોતિમાં પ.પૂ. દીદીની નિશ્રામાં ભગવાન ભજવાનું સૌભાગ્ય આપ્યું.**

પ.પૂ. ગુરૂજીએ અમારી સાથે અમારા જેવાં થઈને સાધના માર્ગ પર અમને દોર્યા છે. ઘણી વાર સભાઓમાં સંતો - સ્વરૂપોના મુખે અમે સાંભળ્યું છે અને પ.પૂ. ગુરૂજી પોતે પણ પોતાના પ્રસંગો બતાડતા હોય છે, ત્યારે હું તો ખુશ થઈ જઉં કે આ સારૂં, ગુરૂજી પણ આપણા જેવા જ હતા... બીજી બાજુ, હું એક જ નહી, પણ **દિલ્હી સમાજના દરેક મુક્ત એમ જ કહે છે કે પ.પૂ. ગુરૂજી છે તો અમે છીએ, નહીં તો અમે સત્સંગ કરીએ એવાં હતાં જ નહીં**. ખરેખર, પ.પૂ. ગુરૂજી ન હોત તો હું કોઈ દિવસ આ રસ્તે ન ચાલી હોત. પ.પૂ. ગુરૂજી અમારાં જેવાં જ હતાં! એવું સાંભળીએ છીએ, પણ....આટલા ચંચળ અને તોફાની, બુદ્ધિશાળી પણ ખૂબ; છતાં આ રસ્તે ચાલીને પ.પૂ. કાકાજીને એટલા રાજી કરી લીધા કે આજે સ્વયં કાકાસ્વરૂપ બની ગયા! કેવી રીતે? જે પોતે પ્હેલાં જ સ્વભાવથી થોડા સત્ત્વગુણી હોય, ડાહ્યા - ડમરા હોય, એમને કદાચ ભગવાન ભજવામાં બહુ કઠણ ન પડે પણ આ તો રસ્તો જ સાવ જુદો! એમણે કાકા સાથે કેવી અસાધારણ પ્રીતિ કરી હશે? એનો ખ્યાલ તો મ્હારા જેવીને આવી જ ન શકે. પણ, ઘણી વાતો જ્યારે હું સાંભળું છું ત્યારે મને થાય કે આ કેટલી મોટી વાત છે! અમે કેટલી ય વાર સાંભળ્યું છે કે પ.પૂ. ગુરૂજી રાત - રાત ભર જાગીને ખૂબ ભજન કરતાં. **સમૂહમાં રહીએ એટલે પ્રસંગો તો બને જ છે, પણ ત્યારે પોતાની બુદ્ધિના તર્ક છોડીને ભજનનું બળ લેવું એ બહુ જ અઘરૂં થઈ જાય છે...** એવી ગરજ, એવો ખપ મારામાં તો નથી. ઘણીવાર પ.પૂ. બાપા કે

પ.પૂ. કાકાજી સાથેના પોતાના પ્રસંગો પ.પૂ. ગુરૂજી બતાડે છે, ત્યારે ખબર પડે કે રાતના પ.પૂ. ગુરૂજી રાહ જોતાં હોય કે એમની રૂમની લાઈટ ચાલુ થાય ને પ.પૂ. ગુરૂજી એમની પાસે જાય ને એમના દર્શન કરતા બેસી રહે – રાતે! કેવી પ્રીતિ હશે એમને ? હું મ્હારી વાત કરૂં તો - રાતે દર્શનનો લ્હાવો મળતો હોય, તો પણ જ્યારે ઊંઘ આવે ત્યારે એમ જ થાય કે સવારે દર્શન કરીશું . એમણે દીક્ષા લીધી અને થોડા વર્ષોમાં જ સ્થૂળ દેહે બાપાથી અલગ થયાં; પછી દિલ્હી એટલે પ.પૂ. કાકાજીથી સ્થૂળ દેહે દૂર રહેવું પડ્યું.

અત્યારે અહીં પ.પૂ. ગુરૂજી બધાની સાથે હૉલમાં સુઈ જાય છે. એઓ એમ કહે છે કે મ્હારી આજૂ બાજૂ બધા હોય તો મને ઊંઘ સારી આવે અને એમાં આવાજ થતો રહે તો તો બહુ જ સારી ઊંઘ આવે! **એટલે કે અહીં જ્યારે એઓ આરામમાં હોય ત્યારે સેવકોએ એમ પણ નહીં કહેવાનું કે પ.પૂ. ગુરૂજી આરામમાં છે, તમે અવાજ નહીં કરો. એમણે એ વાત જ વહેતી મૂકી છે કે મને તો અવાજમાં જ ઊંઘ સારી આવે!** એટલે આપણે કોઈને કહીએ કે અવાજ નહીં કરો તો એ તરત કહે કે અરે! ગુરૂજી ને તો અવાજમાં સારી ઊંઘ આવે છે. મેં મ્હારી જિંદગીમાં એવું કોઈ નથી જોયું કે અવાજમાં કોઈને ઊંઘ સારી આવતી હોય. હવે **આ વાતને સાચી માનીયે તો** એ વિચાર આવે કે સમૂહમાં રહેતા હોઈએ ત્યારે એવી કોઈ જગ્યા જ નથી હોતી કે જ્યાં વગર અવાજે શાંતિથી સુવું હોય તો સુઈ શકાય. તો, પ.પૂ. ગુરૂજી જ્યારે બધા સંતો સાથે રહેતા હશે, ત્યાં સમૂહમાં સાનૂકૂળતાથી રહેવાય એવી ટેવ જ એમણે પાડી દીધી અને અમને સહુને આ શીખવે છે. જો આ વાતને એમ માનીએ કે પ.પૂ. ગુરૂજી ભલે એવું કહે છે, પણ ખરેખર તો એમને ઊંઘ નહીં આવતી હોય, તો એઓ કેટલી સામાન્ય કક્ષા પર અમારી સાથે જીવે છે કે સેવકો ને એમ પણ ન થાય કે આપણા ગુરૂ આરામમાં છે તો આપણે ત્યાં ન જઈએ કે અવાજ ન કરીએ - **એવું ડિસ્ટન્સ પણ એ નથી રાખવા દેતા!**

પ.પૂ. ગુરૂજી જ્યારે વિચરણમાં જાય, પ્લેનમાં કે ટ્રેનમાં, સાથે નાસ્તો કે જમવાનું લઈ જાય. એમાં સ્વભાવિક છે કે સેવકોની એ ઇચ્છા રહે કે પ.પૂ. ગુરૂજીના માટે આપણે સ્ટીલના વાસણ રાખીએ. બીજા બધાં માટે ડિસ્પોઝેબલ ભલે વાપરીએ. પણ પ.પૂ. ગુરૂજી એટલું પણ નથી કરવા દેતા અને એવો જ આગ્રહ રાખે કે મ્હારા માટે પણ ડિસ્પોઝેબલ જ વાપરવાના. હું આ બધું એટલે લખું છું કે આવી નાની- નાની વસ્તુઓ દ્વારા એમના જીવનથી ખૂબ શીખવા મળે છે કે જ્યારે **એમને અમે મોટા માનતા હોવાં છતાં પણ એકદમ સામાન્ય કક્ષાએ આવીને જીવે છે; તો પછી અમે કેવી રીતે માનની અપેક્ષા રાખી શકીએ ?**

આવી ઘણી બધી વાતો છે કે જે પ.પૂ. ગુરૂજીના જીવનશૈલીમાંથી શીખવા મળે છે. પ.પૂ. ગુરૂજી પોતે 'શાસ્ત્રી' છે. ઘણાંને કદાચ ખબરે ય નહીં હોય. કારણ, કોઈ દિવસ એમના મોઢે નથી સાંભળ્યું કે હું 'શાસ્ત્રી' છું. ડિગ્રીનો કે આપણા ભણતરનો ભાર પણ સાધકને રહેવો ન જોઈએ. **'અસલી ડિગ્રી તો સાધુતાની જ છે'– એમ એઓ પોતે માને છે ને સૌને મનાવે છે.** એમની પોતાની અંગ્રેજી મારા કરતાં તો સરસ છે અને મ્હારી તો ના વૉકેબલરી એટલી સારી છે, ના એમના જેવી ગ્રામર છે; છતાં એઓ જ્યારે અંગ્રેજીમાં કંઈ લખશે, તો મને સેવક દ્વારા ચેક કરાવવા મોકલશે કે આ બરોબર છે ? એમને બધા જ ફીલ્ડની ય નૉલેજ છે, છતાં કંઈ પણ કામ કરવું હોય છે તો એ ફિલ્ડથી સંબંધિત

વ્યક્તિને પૂછીને જ કામ કરશે. પછી એ અમારા જેવા એમનાથી ખૂબ નાના હોય, તો પણ એ એવી સહજતાથી પૂછે કે જાણે એમને સાચે ખબર ન પડતી હોય! બીજી બાજુ હું મારૂં પોતાનું વિચારૂં તો આપણે કોઈ કામ કરીએ ત્યારે મનમાં એમ તો રહે જ કે હું આ કામ એવું કરૂં કે બધાને ખબર પડે કે મને સારૂં આવડે છે અને અપેક્ષા રહે કે આપણા વખાણ થાય કે આ સરસ કર્યું. એમાં જો કોઈ બીજાને આપણો યશ મળતો હોય તો તરત બોલાઈ જવાય કે અચ્છા! આ તો મેં કર્યું હતું. જ્યારે, પ.પૂ. ગુરૂજી પોતે કરતાં હોય છે પણ એનો શ્રેય બીજાને આપીને ખુશ થતા હોય છે.

મેં કોઈ સંકલ્પ કર્યો હોય કે મનમાં કંઈ વિચાર્યું હોય તે તરત જ પ.પૂ. ગુરૂજીએ અંર્તયામીપણે પૂરું કર્યું હોય, એવા પ્રસંગો તો લગભગ રોજ જ બનતા હોય છે. એમાંથી હું શું-શું લખું એની કંઈ સૂઝ પડતી નથી. ૨ જુલાઈએ મને દીક્ષા આપવાનું નક્કી થયું કે ૦૭.૦૭.૦૭ સરસ ડેઈટ છે, એ દિવસે ગાર્ગીને દીક્ષા આપી દઇએ. તેની આગલી રાતે હું 'બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ' પુસ્તક લઈને વાંચવા બેઠી'તી. થોડી વાર એ વાંચુ અને પછી થોડી વાર ભજન કરૂં. પણ આખી રાતમાં મેં જ્યારે જ્યારે, જેટલી વાર એ ચોપડી વાંચવા માટે ખોલી, ત્યારે પાનું ખોલતા જ દરેક પાને મ્હારી નજર જે વાક્ય પર જતી એમાં લખ્યું હોય–**'કાલે તમે દીક્ષા લેવાના, આ માર્ગ તો મરજીવાનો માર્ગ છે...'** આમ બધી વાતો દીક્ષા લેવાની જ આવી, જાણે પ.પૂ. ગુરૂજી જ મને કાઢી આપતા હોય!

જીવનમાં બનતા નાના-નાના પ્રસંગોમાંથી પ.પૂ. ગુરૂજી અમને કેટલી સહજતાથી બ્હાર કાઢી લે છે, એની એક નાની વાત લખું છું. મ્હારો મૂળ સ્વભાવ કે પ્રકૃતિ કહો એ ઈર્ષ્યાળુ છે. પ.પૂ. ગુરૂજીથી પણ અપેક્ષા રહે અને એમના માટે એક પઝેઝિવ ઇન્સટિન્ક્ટ પણ રહે, જેને લીધે નાનપણથી પ.પૂ. ગુરૂજીને હું ખૂબ ઓશિયાળા કરતી આવી છું અને પ.પૂ. ગુરૂજી ખૂબ જ ટૉલરૅન્ટ બની મને એ કક્ષાથી આગળ લઈ જવા ઉધમ કરતા જ રહ્યા છે. પ.ભ. નવીનભાઈનો પૌત્ર **પૂ. નક્ષત્ર પ.પૂ. ગુરૂજીનો ખૂબ જ વ્હાલસોયો છે.** ૬ મહીનાનો હતો ત્યારે અમે જ્યારે પણ મંદિરે જઈએ, પ.પૂ. ગુરૂજી એના સાથે જ રમતા હોય, વાતો કરતા હોય, એને જોતા હોય યા તો એની જ વાત કરતા હોય. હું મંદિરે જઉં અને મને થાય કે પ.પૂ. ગુરૂજીને જ્યારે ય જુઓ ત્યારે શું નક્ષુ, નક્ષુ કરતા હોય છે? મને પર્સનલી નક્ષુ સાથે કંઈ વેર ન્હોતું, પણ ગુરૂજીનું ધ્યાન એનામાં જ હોય છે, એનો વાંધો પડયો'તો. એક દિવસ હું સવારે મંદિરે ગઈ અને અક્ષરજ્યોતિ પાછી આવતી હતી ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ સેવક સાથે મને એક ચોપડી મોકલાવી - 'Krishna - The God who lived as man' અને સાથે કહેવડાવ્યું કે આ ચોપડી સારી છે. વાંચવી હોય તો વાંચજે. મેં એ ચોપડી લીધી અને અક્ષરજ્યોતિ આવી ગઈ. એનું ટાઈટલ જ મને બહુ ગમી ગયું હતું કે આ તો પ.પૂ. ગુરૂજી માટે લખ્યું હોય એવું છે. એ પણ આપણી વચ્ચે આપણા જેવા બનીને રહે છે! અને... મેં એ ચોપડી ખોલી કે તરત મારી આંખ સામે લખેલું આવ્યું –

'What happened to your vast knowledge, your wisdom, your analytical mind, your extra ordinary intelligence...? Subhadra is a mere child... Are you going to compete with a child?'

આ વાંચતા જ મને સમજાયુ કે પ.પૂ. ગુરૂજી મને શું કહેવા માંગે છે? અને **વાત તો એવી જ હતી કે કોઈને ખબર પડે કે મને આટલા નાના બાળકની ઇર્ષ્યા આવે છે, તો કેવું લાગે?**

પ.પૂ. ગુરૂજીના દિલની અને એમના કૅરિંગ નેચરની વાત કરવી તો મ્હારે કંઈ બાકી રહેતી નથી. આપણને દરેકે એનો અનુભવ કર્યો જ છે અને એટલે જ તો સૂત્ર નિકળ્યું છે - **'કૅરિંગ ધાઈ નેઈમ ઇઝ ગુરૂજી!'** અમારા સૌનું જતન એ એવી રીતે કરે છે કે સગા માં-બાપ તો શું, આ દુનિયામાં કોઈ પણ ન કરી શકે. એમને પોતાના માટે કંઈ ખર્ચો કરવો હશે તો એ કરવા નથી દેતા. ભક્તોના કે અમારાં મોઢામાંથી કંઈ નિકળે એ તરત પુરું કરતા હોય છે. અમે એસ.એફ.એસ.માંથી મોટા 'અક્ષરજ્યોતિ'માં શિફ્ટ થયા હતાં. મને રાત્રે અંધારામાં એકલા જતા-કરતા ડર લાગે. તો અમે વાત કરતા હતા કે 'અક્ષરજ્યોતિ' નાનું હતું ત્યારે તો કંઇ વાંધો ન્હોતો આવતો, પણ હવે રાત્રે તરસ લાગશે તો હું શું કરીશ? કોઈ પાસે આ વાત સાંભળીને તરત પ.પૂ. ગુરૂજીએ કહેવડાવ્યું કે એની રૂમમાં એક નાનું ફ્રીજ મૂકાવી દઇએ! અને... પૂછપરછે ય કરવા લાગ્યા કે નાનું ફ્રીજ કેટલાનું આવશે? મને આ વાતની ખબર પડી એટલે મેં કહેવડાવ્યું કે જે રૂમમાં મ્હારે સુવાનું છે, એની બ્હાર નીકળતા જ કિચન છે ને તો પણ ન જવાય, તો પાણીની બોટલ લઇને સુઈ શકાય છે. આ વાત એકદમ નાની છે, પણ પ.પૂ. ગુરૂજીનું દિલ કેવું છે એનું દર્શન કરાવે છે. વળી 'મને હજી પણ અંધારામાં જવાથી ડર લાગે છે'—એ વાત જે કોઈ સાંભળે એ એમ કહેવા લાગે કે ભગવાન મળ્યા પછી શું ડરવાનું? તને એટલો ભરોસો નથી? વગેરે વગેરે... પણ જ્યારે કોઈ આમ કહેતું હોય અને પ.પૂ. ગુરૂજી સાંભળે તો તરત કહે - અરે! મને પણ એકલા ડર લાગે છે. એમા શું થયું? જો કે મને ખબર છે કે આવો ડર ન લાગવો જોઈએ, પણ આમ પ.પૂ. ગુરૂજી અમારૂં બધાનું ખૂબ સાચવી લેતા હોય છે...

પ.પૂ. ગુરૂજીએ અંહીયા અમ સહુના જીવનમાં પ.પૂ કાકાજીનો અને બધાં સ્વરૂપોનો મહિમા એવો ભરી દીધો છે કે મેં પ.પૂ. કાકાજીના સ્થૂળ દેહે દર્શન નથી કર્યા, પણ મને એવો એહસાસ જ નથી થતો કે મેં કાકાજીને જોયા નથી. કેમકે પ.પૂ. ગુરૂજીની દરેક ક્રિયામાં, વાતોમાં મેં પ.પૂ. કાકાજીને જ જોયા છે. આજે કોઈ પ.પૂ. કાકાજીની વાત કરતું હોય, તો, પ.પૂ. કાકાજીની એ છવિ તરત સામે આવી જાય, જાણે મેં એમને જોયા જ હોય. હું ઘણી વાર શોભનાભાભીના મોઢેથી પ.પૂ. કાકાજીની વાતો સાંભળતી કે એઓ ચાંદની ચૌકમાં અમારા જૂના ઘરે આવતા. એક વાર પ.પૂ. કાકાજીએ મ્હારી મોટી બેન - પૂ. પરછાઈ જ્યારે એ નાની હતી ત્યારે એને એક હાર પહેરાવીને 'કોમલ' નામ આપ્યું હતું. હું ઘણીવાર શોભનાભાભીને પૂછતી કે ત્યારે હું પણ તો હોઈશ ને! જો કે હું તો પરછાઈથી પાંચ વર્ષ નાની છું, છતાં પૂછતી કે કાકાજીએ કોઈ દિવસ તો મને જોઈને ય આવું કંઈ કહ્યું હશે ને? તો એ કહેતી કે — મને યાદ નથી આવતું એવું કંઈ. હું ઘણી વાર એના લીધે થોડી મુંઝાતી કેમકે મને એમ થતું કે કાકાજીના વખતના જે મુક્તો છે — જેમના માટે કાકાજીએ કંઈ ઇન્ડીકેશન આપ્યું હશે, એમને માટે પ.પૂ. ગુરૂજીને કંઈ વધારે હશે. એક વાર આમ વિચાર કરતી કરતી રાતે સૂઈ ગઈ, તો સપનામાં મને પ.પૂ. ગુરૂજીએ પ.પૂ. કાકાજીના એવા દર્શન કરાવ્યા કે એના પછી મને કોઈ દિવસ એવું નથી લાગ્યું કે હું પ.પૂ. કાકાશ્રીને નથી મળેલી. સપનામાં એવું દેખાયું કે પ.પૂ. કાકાજી દિલ્હી આવવાના છે અને પ.પૂ. ગુરૂજી મને કહેવડાવે છે કે

કાકાજીને સ્ટેશને લેવા ગાડી લઈને તું જતી રહે. મેં પૂછાવ્યું કે હું કેવી રીતે જઉં? કાકાજીએ મને ક્યાં જોઈ છે? એ મને કેવી રીતે ઓળખશે? તો પ.પૂ. ગુરૂજીએ કહેવડાવ્યું કે તું જા, એઓ તને ઓળખી જશે. હું સ્ટેશને જઈ પ્લૅટફૉર્મ પર ઊભી રહી; ત્યાં તો ટ્રેન આવી અને પ.પૂ. કાકાજી ડબ્બાના દરવાજા પર ઊભા રહી દૂરથી જ મને જોઈ હાથ હલાવા લાગ્યા! ગાડી રોકાઈ તો મેં પ.પૂ. કાકાજીના હાથમાંથી એમની બેગ લીધી અને પૂછ્યું કે તમે મને કેવી રીતે ઓળખી? પ.પૂ. કાકાજીએ મને ભેટીને એકદમ કહયું- અરે! હું તને ન ઓળખું! અને...હું જાગી ગઈ. **આ સપનાની મેં જ્યારે વાત કરેલી ત્યારે સાંભળનાર કહેતા બી કે પ.પૂ. કાકાજીની ટ્રેઇન સ્ટેશન પર એન્ટર થતી ત્યારે પ.પૂ. કાકાજી ડબ્બાના દરવાજે અચૂક ઊભા જ હોય ને લેવા આવનારને જુએ એટલે હાથ હલાવે!** મને આમ કોઈ સપના આવતા નથી. આવે, તો યાદ નથી રહેતા; પણ આ વાત હું જ્યારે પણ કરૂં છું તરત કાકાજીની એ મૂર્તિ મ્હારી આંખોની સામે આવી જાય છે!

પ.પૂ. ગુરૂજી કોઈ વાત હોય ત્યારે હંમેશા મારા નામે કહેતા હોય કે સ્ટેપ બાય સ્ટેપ જાઓ. મને એ તો ખબર નથી પડતી કે પ.પૂ. ગુરૂજી આમ કેમ કહે છે, પણ હસતા-રમતા, આનંદ કરાવતાં પ.પૂ. ગુરૂજી સ્ટેપ બાય સ્ટેપ અમ સહુને આધ્યાત્મિકતામાં આગળ લઈ જાય છે એ વાત ચેક્કસ છે.

તો, **પ.પૂ. કાકાજીના સાક્ષાત્કારના હીરક મહોત્સવે** અને **પ.પૂ. ગુરૂજીના અમૃત મહોત્સવે** પ.પૂ. કાકાજી, પ.પૂ. ગુરૂજી અને સહુ સ્વરૂપોના ચરણોમાં એક જ પ્રાર્થના કે તમે તો અમને સ્ટેપ બાય સ્ટેપ લઈ જ જાવ છો, એમાં હું ક્યાયં અટકી ન જાઉં! હું આપની ખૂબ જ ઋણી છું.

હવે, તમે બધાં રખે માનતા કે **'મારા ગુરૂજી'** છે એટલે મેં એમને આવા ચીતર્યા છે. **'મારા ગુરૂજી'** ખરેખર આવા જ છે; એટલે મેં આવું બધું લખ્યું છે. તો, સાચકલુ માનજો.

– સાધ્વી ગાર્ગી, અક્ષરજ્યોતિ

[हिन्दी अनुवाद]

मेरे गुरुजी, मेरी नज़र से...

प.पू. गुरुजी के बारे लिखने बैठती हूँ, तब भजन की एक पंक्ति याद आती है - 'मैं तो नहीं हूँ काबिल, तेरा पार कैसे पाऊं, टूटी हुई वाणी से गुणगान कैसे गाऊं...' मुझे आध्यात्मिक बातें करनी या लिखनी नहीं आती, लेकिन प.पू. गुरुजी का जीवन मैंने मेरी बालक दृष्टि से जैसा देखा है, वैसा लिखने की हिम्मत कर रही हूँ।

सबसे पहले तो मुझे जब कोई यह पूछता है कि तू भगवान भजने कैसे आई? उसका जवाब मुझे क्या देना, वह मैं सोचती ही रह जाती हूँ; क्योंकि मुझे खुद को ही नहीं पता कि मैं भगवान भजने के लिए कैसे आ गई? बचपन में ही प.पू. गुरुजी से ऐसा लगाव हो गया था कि उनके बिना रहा न जाए। ऐसा भी नहीं था कि उनके साथ लगाव होते ही जगत खारा हो गया हो... बहुत शौक थे... नखरे थे... अरे! अभी भी हैं। मैं स्वभाव से भी खूब चंचल... जो सत्संगी मुझे मंदिर में देखते, उन्हें तो यही लगता था कि यह बड़ी होकर भगवान भजेगी। लेकिन मैं जहां रहती थी, वहां 'गुजरात एपार्टमेन्ट्स' में सब यूँ कहते थे कि इसकी बड़ी बहन तो वहाँ रह सके ऐसी है, पर ये तो ६ महीने में वापस आ जाएगी...ये वहाँ रह ही नहीं सकती! मेरी १० साल की उम्र में मुझे किसी ने पूछा कि गुरुजी तेरे क्या लगते हैं? तब मैंने जवाब दिया था– **लाईफ पार्टनर**! 'लाईफ

पार्टनर' किसे कहते हैं, तब मुझे वह पता भी नहीं था और उसका अर्थ भी मैं नहीं जानती थी। पर, जब मैंने दीक्षा ली तब महाराज की मूर्ति के पास एक बोर्ड रखा था –

हथेवाळो हरि संगाथे में कीधो रे, भूमानंद कहे जन्म सफळ करी लीधो रे!

यानि–हस्तमिलाप हरि के साथ मैंने किया रे, भूमानंद कहे जन्म सफल कर लिया रे! और...**प.पू. गुरुजी की मैं इसलिए खूब ऋणी हूँ कि यहाँ-अक्षरज्योति में प.पू दीदी की निश्रा में भगवान भजने का सौभाग्य मुझे दिया है।**

हमारे साथ हम जैसे बनकर प.पू. गुरुजी ने हमें साधना मार्ग पर अग्रसर किया है। कई बार सभाओं में संतों-स्वरूपों के मुख से और प.पू. गुरुजी द्वारा बताए गए, उनके प्रसंगों को सुन कर मैं तो बहुत खुश हो जाती हूँ कि यह अच्छा है, गुरुजी भी हमारे जैसे ही थे... दूसरी ओर, मैं अकेली ही नहीं, बल्कि **दिल्ली समाज के सभी मुक्त यही कहते हैं कि प.पू. गुरुजी हैं तो हम यहाँ हैं, वर्ना तो हम सत्संग करें ऐसे थे ही नहीं।** सच, प.पू. गुरुजी नहीं होते तो मैं कभी भी इस रास्ते पर चली नहीं होती। प.पू. गुरुजी हमारे जैसे ही थे! ऐसा सुनते हैं, पर... इतने चंचल और शरारती, बुद्धिशाली भी खूब; फिर भी इस रास्ते चलकर प.पू. काकाजी को इतना राजी कर लिया कि आज खुद काकाजीस्वरूप बन गए! कैसे? जिसका स्वभाव पहले से ही थोड़ा सत्त्वगुणी हो, सीधा-सादा हो, उन्हें भगवान भजने में शायद बहुत कठिनाई न हो, पर यह तो रास्ता ही बिल्कुल अलग! उन्होंने काकाजी के साथ कैसी असाधारण प्रीति की होगी? इसका ख्याल तो मेरे जैसी को आ ही नहीं सकता। पर, कई बातें मैं सुनती हूँ तो लगता है कि यह कितनी बड़ी बात है! हमने कई बार सुना है कि प.पू. गुरुजी रात-रातभर जगकर खूब भजन करते थे। **समूह में रहते हैं, तब प्रसंग तो बनते ही हैं, उस वक्त अपनी बुद्धि के तर्क छोड़कर भजन का बल लेना बहुत मुश्किल हो जाता है...** ऐसी गरज, ऐसा उत्साह मुझ में तो नहीं है। कई बार प.पू. गुरुजी, प.पू. बापा या प.पू. काकाजी के साथ के अपने प्रसंग बताते हैं, तब पता चलता है कि रात को प.पू. गुरुजी राह देखते कि उनके कमरे की लाईट जले और प.पू. गुरुजी उनके पास जाकर रातभर दर्शन करते रहते! कैसी प्रीति होगी उन्हें? मैं अपनी बात करूं तो रात को दर्शन करने का यदि मौका मिलता भी हो, तब भी नींद आने पर तो ऐसा ही होता है कि सुबह दर्शन करेंगे। प.पू गुरुजी ने दीक्षा ली और थोड़े ही सालों में स्थूल देह से प.पू. बापा से अलग हो गए; फिर दिल्ली आए और प.पू. काकाजी से दूर रहना पड़ा।

अभी यहाँ प.पू. गुरुजी सबके साथ हॉल में सो जाते हैं। वो यूँ कहते हैं कि मेरे आस-पास सब होते हैं, तो मुझे नींद अच्छी आती है और उसमें भी आवाज़ होती रहे, तब तो बहुत ही अच्छी नींद आती है! सो, **वे जब आराम में होते हैं, तब सेवक ऐसा भी नहीं कह सकते कि प.पू. गुरुजी आराम में हैं, आप आवाज़ न मत करो। उन्होंने ऐसी ही बात बहती रखी है कि मुझे आवाज़ में नींद अच्छी आती है।** अतः हम किसी को कहने भी जाएं कि आवाज़ मत करो, तो वो तुरंत जवाब देगा कि अरे! गुरुजी को तो आवाज़ में ही नींद अच्छी आती है। मैंने तो अपनी जिंदगी में ऐसा कोई नहीं देखा जिसे आवाज़ में नींद अच्छी आती हो। फिर भी, **इस बात को अगर सच मानें तो** ऐसा विचार आता है कि समूह में रहते हैं, तब ऐसी कोई जगह तो नहीं मिलती जहाँ जाकर

बिना शोर-शराबे के शांति से सो सकें। तो, प.पू. गुरुजी जब सब संतों के साथ रहते होंगे, तब वहां समूह में सानुकूलता से रहने की आदत ही उन्होंने डाल ली और हम सभी को भी यह सिखाते हैं। इस बात को ऐसा मानें कि प.पू. गुरुजी भले ऐसा कहते हैं, लेकिन सच में तो नींद नहीं ही आती होगी, तो वे कितनी सामान्य कक्षा पर हमारे साथ जीते हैं कि सेवकों को भी हिचक नहीं होती कि हमारे गुरु आराम में हैं, सो हम वहाँ न जाएँ या आवाज़ न करें–**ऐसा डिस्टन्स भी वे रखने नहीं देते**!

प.पू. गुरुजी जब विचरण में जाते हैं, तब प्लेन या ट्रेन में नाश्ता या भोजन लेकर जाते हैं। उस समय स्वाभाविक है कि सेवकों की तो इच्छा होती है कि दूसरों के लिए डिस्पोज़ेबल भले इस्तेमाल करें, पर प.पू. गुरुजी के लिए हम स्टील के बर्तन रखें। लेकिन, प.पू. गुरुजी यह भी नहीं करने देते और ऐसा ही आग्रह रखते हैं कि मेरे लिए भी डिस्पोज़ेबल ही इस्तेमाल करो। मैं यह सब इसलिए लिख रही हूँ कि उनके जीवन की ऐसी छोटी-छोटी बातों द्वारा बहुत सीखने को मिलता है कि **उन्हें हम बड़ा मानते हैं, फिर भी वे एकदम सामान्य कक्षा पर आकर जीते हैं; तो फिर हम कैसे मान की अपेक्षा रख सकते हैं?**

प.पू. गुरुजी की ऐसी जीवनशैली से कई बातें सीखने को मिलती है। प.पू. गुरुजी खुद 'शास्त्री' हैं। कइयों को तो शायद पता भी नहीं होगा; क्योंकि किसी भी दिन उनके मुख से नहीं सुना कि मैं 'शास्त्री' हूँ। डिग्री का या अपनी पढ़ाई का बोझ (गरूर) भी साधक को रहना नहीं चाहिए। **'असली डिग्री तो साधुता की है'–ऐसा वे खुद मानते हैं और सभी को मनवाते हैं।** उनकी अंग्रेजी मुझ से तो बहुत अच्छी है और मेरी तो वॉकेबलरी भी इतनी अच्छी नहीं है, न ही ग्रामर उनके जैसी है; फिर भी जब अंग्रेजी में कुछ लिखेंगे, तो सेवक द्वारा मुझ से चेक करवाने के लिए भेजेंगे कि यह ठीक है? उन्हें सभी फील्ड की भी नॉलेज है, फिर भी कोई काम करना होगा, तो उस फिल्ड से संबंधित व्यक्ति को पूछ कर ही काम करेंगे। फिर भले ही वह हमारे जैसा उनसे खूब छोटा ही क्यों न हो, तो भी वे ऐसी सहजता से पूछेंगे मानो उन्हें सच में ही ख्याल न पड़ता हो! दूसरी ओर मैं अपने बारे में सोचती हूँ, तो हम कोई काम करें, तब मन में ऐसा तो रहता ही है कि मैं यह काम ऐसा करूँ कि सभी को ख्याल पड़े कि मुझे कितना अच्छा आता है और अपेक्षा भी रहती है कि सब मेरा बखान करें कि यह अच्छा किया। उसमें भी यदि किसी दूसरे को इसका यश मिल जाए, तो तुरंत मुँह से निकल जाता है–अच्छा! यह तो मैंने किया था। जबकि, प.पू. गुरुजी खुद करते हैं, लेकिन उसका श्रेय दूसरे को देकर खुश होते हैं।

मैंने कोई संकल्प या विचार किया हो और प.पू. गुरुजी ने अंर्तयामीरूप से वह तुरंत पूरा किया हो, ऐसे प्रसंग तो तकरीबन रोज ही बनते हैं। उनमें से मैं क्या-क्या लिखूँ, वह समझ नहीं आता। २ जुलाई २००७ को पक्का हुआ था कि ०७.०७.०७ अच्छी डेइट है, उस दिन गार्गी को दीक्षा दे देते हैं। उससे अगली रात मैं 'ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज' की पुस्तक पढ़ने बैठी। थोडी देर वह पढ़ती और थोड़ी देर भजन करती। पर, पूरी रात में जब-जब, जितनी भी बार पढ़ने के लिए पुस्तक खोली, तब पन्ना खोलते ही मेरी नज़र जिस वाक्य पर जाती, उसमें लिखा होता - **'कल तुम दीक्षा लेने वाले हो, ये मार्ग तो मरजीवों का है...'** यूँ हर एक बात दीक्षा लेने के बारे ही आई, मानो प.पू. गुरुजी ही निकाल कर दे रहे हो!

जीवन में बनते छोटे-छोटे प्रसंगो में से प.पू. गुरुजी हमें कितनी सहजता से बाहर निकाल लेते हैं, उसकी एक छोटी-सी बात लिख रही हूँ। मेरा मूल स्वभाव या प्रकृति कहो, वो ईर्ष्यालु है। सो, प.पू. गुरुजी से भी खूब अपेक्षा रहती है और उनके प्रति एक पझेझिव इन्सटिंक्ट भी रहती है, जिसकी वजह से बचपन से मैं प.पू. गुरुजी को खूब परेशान करती रही हूँ, पर प.पू. गुरुजी बहुत ही टॉलरन्ट रहकर मुझे उस कक्षा से आगे ले जाने के लिए उद्यम करते ही रहे हैं। **प.भ. नवीनभाई का पोता पू. नक्षत्र प.पू. गुरुजी का खूब लाड़ला है।** वह ६ महीने का था, तब हम जब भी मंदिर जाते तो प.पू. गुरुजी उसके साथ ही खेल रहे होते या बातें कर रहे होते, उसकी तरफ ही देखा करते या उसके बारे में ही बात करते हों। मैं मंदिर जाती और मुझे होता कि प.पू. गुरुजी को जब देखो, तब क्या नक्षु-नक्षु करते रहते हैं? हाँलाकि, मुझे पर्सनली नक्षु के साथ कोई बेरूखी नहीं थी, पर प.पू. गुरुजी का ध्यान उसमें ही रहता है, उसका हर्जा था। एक दिन सुबह मैं मंदिर दर्शन करने गई और अक्षरज्योति लौट रही थी, तब प.पू. गुरुजी ने सेवक द्वारा मुझे एक किताब भिजवाई– `Krishna - The God who lived as man' और साथ में कहलवाया कि यह किताब अच्छी है, पढ़नी हो तो पढ़ना। वो किताब लेकर मैं अक्षरज्योति आ गई। मुझे उसका टाईटल ही बहुत पसंद आया कि यह तो प.पू. गुरुजी के लिए लिखा हो ऐसा है। वे भी तो हमारे बीच में हम जैसे बनकर रहते हैं! और... मैंने किताब खोली कि एकदम मेरी आँखो के सामने लिखा हुआ आया –

`What happened to your vast knowledge, your wisdom, your analytrical mind, your extra ordinary intelligence...? Subhadra is a mere child...Are you going to compete with a child?'

यह पढ़ते ही मुझे समझ में आया कि प.पू. गुरुजी मुझ से क्या कहना चाहते हैं? और **बात तो ऐसी ही थी कि किसी को पता चले कि मुझे इतने छोटे बच्चे की ईर्ष्या होती है, तो कैसा लगे?**

प.पू. गुरुजी के दिल की और कॅरिंग नेचर के बारे कुछ कहना बाकी रहता ही नहीं है। हम सबने उसका अनुभव किया ही है और तभी तो यह सूत्र निकला है– **'कॅरिंग धाई नेम ईज़ गुरुजी!'** हम सबका जतन वो इस प्रकार करते हैं कि सगे माँ-बाप तो क्या, इस दुनिया में कोई नहीं कर सकता। उनके खुद के लिए कोई खर्चा करना हो, तो वह करने नहीं देते। भक्तों के या हमारे मुंह में से कुछ निकलते ही वे तुरंत पूरा करते हैं। हम एस.एफ.एस (फ्लॅट) में से बड़े 'अक्षरज्योति' में शिफ्ट हुए थे। रात के अंधेरे में अकेले जाते-करते मुझे डर लगता है। हम बात कर रहे थे कि 'अक्षरज्योति' छोटा था, तब तो कुछ दिक्कत नहीं होती थी, पर अब रात को प्यास लगेगी तो मैं क्या करूँगी? यह बात किसी से सुनकर तुरंत प.पू. गुरुजी ने कहलवाया कि उसके कमरे में एक छोटा फ्रिज रख देते हैं! और...पूछताछ भी करवाने लगे कि छोटा फ्रिज कितने का आता है? यह बात जब मुझे पता चली तो मैंने कहलवाया कि जिस कमरे में मुझे सोना है, उसके बाहर निकलते ही किचन है और फिर भी अगर नहीं जा पाऊंगी, तो पानी की एक बॉटल साथ लेकर सो सकती हूँ। यह बात है एकदम छोटी-सी, पर प.पू. गुरुजी के दिल का दर्शन करा जाती है। और...'मुझे अभी भी अंधेरे में जाने से डर लगता है' यह बात सुन कर कई यूँ कहे कि भगवान मिलने के बाद क्या डरना? तुझे इतना भरोसा नहीं है? वगैरह वगैरह... पर, ऐसा सुन कर प.पू. गुरुजी तुरंत कहते हैं - 'अरे! मुझे भी अकेले में डर लगता है; उसमें क्या हुआ?' हालाँकि मुझे पता है कि ऐसा डर लगना नहीं चाहिए, पर प.पू. गुरुजी हम सबका यूँ खूब रखते हैं।

प.पू. गुरुजी ने यहाँ हम सबके जीवन में प.पू. काकाजी की और सभी स्वरूपों की ऐसी महिमा भर दी है कि मैंने प.पू. काकाजी के स्थूल रूप से दर्शन नहीं किए, तब भी मुझे एहसास नहीं होता कि मैंने काकाजी को नहीं देखा। क्योंकि प.पू. गुरुजी की हर एक क्रिया, बातों में मुझे प.पू. काकाजी ही दिखाई देते हैं। आज कोई प.पू. काकाजी की बात करता हो, तो प.पू. काकाजी की छवि तुरंत मेरी आंखो के सामने आ जाती है मानो मैंने उनके दर्शन किए ही हो। शोभना भाभी से कई बार प.पू. काकाजी की बातें सुनती कि वे चांदनी चौक में हमारे पुराने घर में आते थे। एक बार प.पू. काकाजी ने मेरी बड़ी बहन – पू. परछाईं जब छोटी थी, तब उसे एक हार पहना कर 'कोमल' नाम दिया था। शोभना भाभी से मैं बहुत बार पूछती कि तब मैं भी तो होऊंगी न! वैसे तो मैं परछाईं से पांच साल छोटी हूँ, फिर भी पूछती कि काकाजी ने कभी तो मुझे देखकर ऐसा कुछ कहा होगा? तो वो कहती कि मुझे ऐसा कुछ याद नहीं आता। इस कारण मैं कई बार थोड़ा उदास हो जाती; क्योंकि मुझे ऐसा लगता था कि काकाजी के समय के जो लोग हैं या जिनके बारे में काकाजी ने कोई इन्डीकेशन दिया हो, उनके लिए प.पू. गुरुजी को कुछ ज्यादा होगा। एक बार यूँ सोचती-सोचती रात को सो गई, तो सपने में प.पू. गुरुजी ने मुझे प.पू. काकाजी के ऐसे दर्शन करवाए कि उस दिन के बाद मुझे कभी लगा ही नहीं कि मैं काकाजी से मिली नहीं हूँ। सपने में ऐसा दिखाई दिया कि प.पू. काकाजी दिल्ली आने वाले हैं और प.पू. गुरुजी मुझे कहलवा रहे हैं कि काकाजी को लेने के लिए गाड़ी लेकर तू स्टेशन चली जा। मैंने पुछवाया कि मैं कैसे जाऊं? काकाजी ने मुझे कहाँ देखा है? वे मुझे पहचानेंगे कैसे? तो प.पू. गुरुजी ने कहलवाया कि तू जा, वो तुझे पहचान लेंगे। मैं स्टेशन जाकर प्लेटफॉर्म पर खड़ी हुई, जैसे ही ट्रेन आई तो देखा कि डिब्बे के दरवाजे पर खड़े हुए प.पू. काकाजी दूर से ही मुझे देखकर हाथ हिलाने लगे! गाड़ी जब रूकी तो मैंने प.पू. काकाजी के हाथ में से उनकी बैग ली और पूछा कि आपने मुझे कैसे पहचाना? प.पू. काकाजी ने मुझे गले लगाकर एकदम कहा – अरे! मैं तुझे नहीं पहचानूँगा! और... मैं जग गई। **इस सपने की मैंने जब बात की, तब सुनने वालों ने बताया कि जब भी प.पू. काकाजी की ट्रेन स्टेशन पर एन्टर होती, तब वे डिब्बे के दरवाजे पर अचूक खड़े ही होते थे और लेने आने वाले को देखते ही हाथ हिलाते!** वैसे मुझे सपने नहीं आते, यदि आते हैं, तो याद नहीं रहते; पर यह बात जब भी करती हूँ, तुरंत काकाजी की वो मूर्ति मेरी आंखो के सामने आ जाती है!

कोई बात हो तो प.पू. गुरुजी मेरे नाम से कहते हैं कि स्टेप बाय स्टेप जाओ। मुझे यह तो नहीं मालूम कि प.पू. गुरुजी ऐसा क्यों कहते हैं, पर हँसते-खेलते, आनंद कराते हुए वे हम सब को आध्यात्मिकता में स्टेप बाय स्टेप आगे ले जा रहे हैं, यह बात पक्की है।

तो, **प.पू. काकाजी के साक्षात्कार हीरक महोत्सव** और **प.पू. गुरुजी के अमृत महोत्सव** पर प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी और सभी स्वरूपों के चरणों मे यह प्रार्थना कि आप तो हमें स्टेप बाय स्टेप ले ही जा रहे हैं, पर उसमें मैं कहीं अटक न जाऊँ! मैं आपकी बहुत ऋणी हूँ।

अब, आप सब यूँ मत मानना कि **'मेरे गुरुजी'** हैं, सो मैंने ऐसा सब लिखा है। **'मेरे गुरुजी'** वाकई ऐसे ही हैं; सो मैंने यह सब लिखा है। तो, सच मानना।

– साध्वी गार्गी, अक्षरज्योति

✡ ✡ ✡

12 मार्च, 2011 प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या पर

प.भ. राकेशभाई शाह (दिल्ली)

...सत्संग में मेरा आना मेरी मिसीस की वजह से हुआ। उन्हें पू. शोभनाभाभी का योग हुआ। उन्होंने उन्हें सत्संग करवाया और सत्संग में पहले उन्होंने आना शुरू किया। वे जब आने लगीं, तो उन्हें यहाँ बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कई बार मुझे कहा कि आप भी आइए, लेकिन शायद मेरा समय नहीं हुआ था या मेरी ऐसी बुद्धि कहिए कि मैं हमेशा मना कर देता। एक बार ए-१०३ के मंदिर में शनिवार की सभा थी। मैं और प्रज्ञा कहीं बाहर होकर इसी रास्ते से गुज़र रहे थे। तो प्रज्ञा ने कहा कि मंदिर रास्ते में पड़ता है और आज शनिवार की सभा भी हो रही होगी, तो आप मुझे वहाँ ले चलिए। वहाँ पहुँच कर मेरा तो यही कहना था कि आप जाओ, मुझे नहीं आना है। पर, उन्होंने कहा कि जब आप यहाँ आए ही हो और सभा चल रही है, तो अंदर ही बैठो। सो, उस बहाने मैं अंदर गया... जैसे ही मैं अंदर गया तो गुरुजी ने पूछा कि ये कौन आए हैं? कीर्तिभाई ने कहा कि ये हमारे नीचे के फ्लैट से जो प्रज्ञा बहन आते हैं, उनके हज़बंड हैं। **गुरुजी** ने छूटते ही कहा – खुद ही नहीं आए, जबरदस्ती लाए लगते हो।

उनकी **शक्ति का तो बयान क्या किया जाए। लेकिन यह जरूर है कि उनके संबंध में जो भी आया है, हर मुक्त की हर तरह से उन्होंने परवरिश की है, चाहे वो व्यावहारिक हो, मानसिक हो या आध्यात्मिक हो और हर तरह उसे आगे ले जाने की हमेशा कोशिश की है... उनका ये अपनापन दिल को छू जाता है।** इसी तरह, **गुरुजी के पास कैसा भी डूबा हुआ आए या किसी भी प्रॉब्लम को लेकर आता है, तो गुरुजी की हमेशा कोशिश रहती है कि पहले उसके दुःख, उसकी पीड़ा को समझें और तुरंत ही फिर उसे हल करने के लिए वे सारे उपाय करने शुरु कर देते हैं।** ऐसा नहीं कि राह देखेंगे कि उनके पास क्या साधन उपलब्ध है। वो तो **अपनी सारी मशीनरी या सत्संग का नेटवर्क उसकी प्रॉब्लम को सॉल्व करने में लगा देते हैं, तो हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए तो वे अविरत परिश्रम और भजन करते हुए छुपा परिश्रम करते हैं।** कई बार तो मैंने देखा है कि किसी सेवक को डांट कर या बुरा-भला कह कर भले वे खुद बुरा दिख जाएंगे, लेकिन उस सेवक को आगे ले जाने के लिए, किसी चीज की भी परवाह न करते हुए वे हमेशा यही कोशिश करते हैं कि मैं उसे सही दिशा में आगे ले जाऊँ।

उनका हमेशा आग्रह रहता है कि हरिभक्त एक-दूसरे से कुटुंबभाव से जुड़कर आत्मबुद्धि और प्रीति से बंध कर सत्संग में रसबस हो जाएँ। यही वजह है कि **एक दिन था कि जब मैं यहाँ आने के लिए मना करता था और आज का दिन है कि जब मैं अपने आपको धन्य समझता हूँ कि दिल्ली के ऐसे समाज में मुझे स्थान मिला है।** जहाँ आपस में हरिभक्त गुरुजी के संबंध से आत्मबुद्धि और प्रीति से जुड़े हुए हैं। गुरुजी हरिभक्तों की महिमा तो बखानते ही हैं, लेकिन निरंतर उनका ये आग्रह रहता है कि हम मुक्तों की महिमा को समझें... छोटी-छोटी चीजें अगर हम उनकी नोट करें, तो निश्चय जो आज यहाँ स्टेज पर बैठ कर तबला-ढोलक बजाता है, जब वह छोटा था, तो उसे कोल्ड ड्रिंक बहुत पसंद थी। वह जब भी आता तब गुरुजी अपने लिए कोल्ड ड्रिंक मंगवाते और निश्चय को पीने के लिए दे देते... उनका ऐसा जॅस्चर यह

एस्टेब्लिश करने के लिए पर्याप्त है कि जो भी इस मंदिर के अंदर आते हैं, वे काकाजी के भेजे हुए पात्र ही हैं, मुक्त हैं। अभी भले हमें दिखता न हो, लेकिन उसकी पोटेन्शिलीटी बहुत ज्यादा है। कुटुंबभाव की निरंतर रट लगाए रहते हैं। **कुटुंबभाव के लिए मुक्तों के सुख-दुःख में गुरुजी हमेशा हाज़िर रहते हैं। उसके लिए न उन्होंने वक्त देखा है और न उन्होंने उसके लिए अपने शरीर की चिंता की है।** मुझे याद है जब कौशिकभाई जानी के लड़के चिन्मय को रात को एपपेन्डिक्स का एकदम दर्द उठा, तो डॉक्टर के पास ले जाने पर उसने कहा कि इसका तो इमीजिएटली ऑपरेशन करना पड़ेगा। जयपुर गोल्डन हॉस्पिटल में रात को करीब बारह बजे के बाद ऑपरेशन के लिए सब तैयारी वगैरह हुई। तो गुरुजी भी उस वक्त वहाँ पहुँच गए थे। इसलिए नहीं कि कौशिकभाई ऐसी सेवा करते हैं, बल्कि मंदिर में वे भी हमारे परिवार के सदस्य हैं। वहाँ पहुँच कर देर रात तक गुरुजी वहीं रहे, ऐसे कई उदाहरण हैं। यूँ वे ख़ुद डमोंस्ट्रेट करते हैं। तो एक विनम्र प्रार्थना से उनसे मांगना ही है कि ऐसा दिव्य समाज जिसमें मुझे रहने को मिला है, उसकी यथार्थ महिमा जानकर और आपके संबंध को देखकर आपके संबंध का सच्चा लाभ अब मैं ले सकूँ। इतना बल-बुद्धि योग आप सदैव मुझे देते रहना।

पू. यज्ञप्रियस्वामी (दिल्ली)

पूर्वाश्रम में मेरा फेमिली जब सत्संग से जुड़ा, तब मेरी उम्र बहुत छोटी थी। पर, गुरुजी के पास आना उनके साथ यहाँ धुन-सभा में बैठना और उससे भी ज्यादा मुझे यहाँ मेरे दोस्तों के साथ खेलना पसंद आता था। हम यहाँ इतने बड़े पार्क में बस खेलते रहते थे। लेकिन धीरे-धीरे दसवीं की पढ़ाई के बाद गुरुजी मुझे अपने साथ सेवक के तौर पर पंजाब, गुजरात, मुंबई ले जाते थे। गुरुजी ने अपनी सेवा में रख कर धीरे-धीरे मुझे सब सिखाया। आज मंदिर में मैं महापूजा करता हूँ। मगर मुझे महापूजा का 'म' नहीं आता था। गुरुजी ने एक शास्त्रीजी को एपॉइन्ट किया। सामने बिठाकर गुरुजी ने ख़ुद भी मेरी क्लास ली, मतलब मुझे सिखाया, मेरी प्रोनन्सियेशन्स सुधरवाई। जब-जब मैं महापूजा करता था, तो वे नोट करते थे कि यहाँ पर इस शब्द का ऐसे नहीं, ऐसा उच्चारण होना चाहिए। इस स्टेप को ऐसे नहीं ऐसे बोलो और इमीजिएटली मुझे कभी नहीं बताते थे। वे नोट कर लेते थे, उसके कुछ टाईम के बाद – करीब एक दो दिन हो जाए या कभी-कभी महापूजा के कुछ घंटों के बाद वे मुझे बुलाकर पर्ची देते थे कि महापूजा में ये चेईन्जिस करने हैं। इस तरह से धीरे-धीरे उन्होंने कोशिश की कि मैं परफेक्ट हो जाऊँ। मुझे पहले से रीडिंग का बहुत शौक है। मुझे स्वामिनारायण सम्प्रदाय के मेइन ग्रंथ का पता चला कि 'वचनामृत' है तो मैंने वह पढ़ा, पर उसमें मुझे कुछ समझ नहीं आया। तो गुरुजी के पास आकर मैंने पूछा – गुरुजी, मैं वचनामृत पढ़ता हूँ, पर मुझे कुछ समझ नहीं आता। तब गुरुजी ने मुझे बताया कि पहले वचनामृत नहीं, पहले आप भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामी, भगतजी महाराज का जीवन चरित्र पढ़ो, फिर धीरे-धीरे वचनामृत पर आना। **यूँ गुरुजी ने धीरे-धीरे, एक-एक स्टेप द्वारा मेरे लिए जो छुपा परिश्रम किया, वह मुझे हमेशा याद रहे, ऐसी मैं प्रार्थना करता हूँ।** प.पू. गुरुजी के साथ सारा दिन रहते हैं, तो उनकी छोटी-छोटी क्रियाएं देखने का मौका मिलता है। **गुरुजी जब बाहर जाते हैं, तब भी वे सेवा में ऐसे ही मग्न रहते हैं।** हम सब जानते हैं कि जिन भक्तों के यहाँ किसी बच्चे का जन्म होता है, वे गुरुजी से नामकरण करवाने आते हैं। और... जैसा कि हम सब जानते हैं कि हर

चीजों में गुरुजी एक वैराईटी चाहते हैं, सो सबको यूनीक नाम देते हैं। गुरुजी जब गुजरात जाते हैं, तो वहाँ कहीं भी बंगलोज़ या किसी शॉप इत्यादि के अलग-अलग अच्छे नाम होते हैं, गुरुजी ऑन रोड़ वे नाम नोट करते रहते हैं। फिर दिल्ली आकर डायरी में उन सब नामों को अल्फाबेटिकली नोट करवाते हैं और जब किसी बच्चे का नाम देना हो, तो राशि से नाम निकाल कर उससे सेलेक्ट करवाते हैं। इतना ही नहीं जब वो ट्रावेलिंग में जाते हैं, तो अपने साथ कोई न कोई मॅटर जरूर रखते हैं। चाहे वो पत्रिका का या किसी बुक का हो और ट्रवेलिंग दौरान गाड़ी में भी या कहीं किसी के घर बैठ कर वे चेक करते हैं। ऐसी सेवा के बारे में **गुरुजी ने बताया** था **कि** इसी प्रकार से मन भगवान में लगा रहता है। यूँ उनकी **सेवा में मन लगा रहे, तो हम सब बहुत जल्दी तरक्की कर जाएँगे।** इसलिए गुरुजी के बारे में बोलने के लिए मैं बहुत छोटा हूँ। मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि आज हमारे सामने इतने सीनियर पू. सुहृदस्वामी है, पू. राकेशभाई हैं – ये **सब वडील संत और हरिभक्त** हैं, तो इन्हीं **का ही एक्जाम्पल लेकर हमें आगे बढ़ना है।** गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि दिल्ली का समाज जो गुरुजी के साथ जुड़ा हुआ है, उन सबके लिए चाहे वो पंजाब से हो, गुजरात से हो या कहीं से हो, उनके लिए प्रार्थना है कि हम सब गुरुजी को आगे रखकर, काकाजी की राह पर बढ़ते रहें। ऐसा आप खूब-खूब बल हमें देना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. स्नेहलस्वामी (सांकरदा)

...सुंदराबाई हॉल में योगीजी महाराज के प्रथम दर्शन में ही उन्हें (गुरुजी को) योगीजी महाराज की सच्ची पहचान हुई... पिछले २०० सालों से हम सभी उनके साथ ही आ रहे हैं। महाराज के समय से पूरा गुणातीत समाज चलता आ रहा है, तभी इन स्वरूपों के प्रति हमें निर्दोषभाव और दिव्यभाव सहज ही रहता है...

मैं जब साधु होने गढ़डा गया था, तो **पप्पाजी ने** मुझे टीका करके इतना ही **कहा – पड़े रहना।** कैसे भी संजोग में यह कपड़े नहीं उतारना। **एकांतिक धर्म सिद्ध कराने की जवाबदारी मेरी है।** यूँ पप्पाजी ने हमेशा ४० - ४० साल तक ये एक ही बात की है। योगीजी महाराज का - काकाजी महाराज का संकल्प जबरदस्त काम कर रहा है। गुरुजी का पूरा परिवर्तन हमने देखा है। ६१ से ७४ तक उनकी साधना की पूरी प्रक्रिया हमने देखी है। गुरुजी के प्रति मुझे खूब दया आती। पर वो पूरा चित्त का शुद्धिकरण था। आज गुरुजी इतनी ऊँची कक्षा पर पहुँच गए कि मैं पिछले कई सालों से देख रहा हूँ कि जब भी उनका प्रवचन आए, पप्पाजी और काकाजी, अटॅन्शन! एकदम! एक साधक जैसे बनकर गुरुजी का प्रवचन सुनते थे। मुझे भी उनका प्रवचन बहुत पसंद आता है। गुरुजी का वो प्रवचन सुनने जैसा होता है। **गुरुजी, योगीजी महाराज के बनाए हुए साधु हैं। काकाजी - पप्पाजी के वारिसदार हैं... पप्पाजी ने** बहुत सालों पहले **बात की थी** कि **पारसमणि तो तुम्हें मिली है,** पर यह मंदिर के गोखले में पड़ी हुई है। **पारसमणि** क्या कि सभा हो या जब जन्मदिन मनाएं तब, हमारे गुरुजी बहुत बड़े, गुरुजी बहुत बड़े, यूँ बोला करें, पर उस**के ऊपर की जो धूल है, वो हटाओ, वो धूल क्या? लापरवाही और प्रमाद !**

...उन्हें हमारा ध्यान रखना पड़े, हमें बुलाना पड़े, हमें संभालना पड़े, हमारा रखना पड़े तो प्राप्ति नहीं होगी... आज गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर वे आशीर्वाद दें कि हमारी बारीक कसर टाल कर हमें मूर्ति सिद्ध बना दो...

पू. कौशिकभाई (एरु)

...जिसे हम चंचल बुद्धि बोलते हैं, ऐसे गुरुजी के हमने दर्शन किए हैं। **मुक्तों के साथ एकाकार भाव से एकात्म रूप से कैसे गुरुजी वर्तते हैं, उसका भी हम दर्शन करते हैं और स्वामी सेवकभाव का भी हम दर्शन करते हैं।** दिलीपभाई कैसे थे और सत्पुरुष की कृपा से आज रूपांतर होकर गुरुजी के द्वारा हम देख रहे हैं...

दिल्ली वासियों को धन्यवाद है कि उनके लिए इतना सुगम रास्ता हो गया। हमारे अक्षरविहारीस्वामिजी कहते हैं कि मुंबई में इतना कुछ होता था। पर, मैंने पूरे सौराष्ट्र माणावदर के ग्रुप को कभी भी भनक पड़ने नहीं दी कि बाहर क्या हो रहा है। बस माहात्म्य में ही रखा था। उन सब बातों से अलिप्त रखा था। तो उनके लिए साधना एकदम सुगम बन गई थी। ऐसे ही **दिल्ली में गुरुजी ने केवल महिमा ही भरकर रखी है। ये कुटुंबभाव-जो अपनापन आज दिख रहा है, उसके पीछे गुरुजी ने साधना की है...** आप सभी मुक्त को धन्यवाद, वर्ना तो हमको कैसे परिचय होता कि गुरुजी ने कुटुंबभाव के ऐसे एक समाज का निर्माण किया। आप सबने उनका ऐसा भरोसा किया और जीने लगे तो आज हमें ऐसा महसूस होने लगा कि नहीं, यहाँ की भूमि कुछ अलग है...

प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब (सूरत)

हम सब जानते हैं कि **गुरुजी बहुत सहजभाव से ऐसी बातें करते हैं, जो हमारे जीवन में अमृत के समान होती हैं...** गुरुजी को जहाँ तक मैंने देखा है, **वे बहुत सरल और सहज हैं।** यूँ तो **मैंने देशभर के बहुत सारे संत-महात्मा देखे हैं, लेकिन जो यहां पर एक कुटुंबभाव है और प.पू. गुरुजी का जो स्नेह प्राप्त होता है, वो कहीं और नहीं होता।** गुरुजी का जब प्रागट्य दिन मनाने जा रहे हैं, तो इस शुभ अवसर पर हमें तो यही संकल्प करना पड़ेगा कि चाहे **हम गुरुजी जैसे न बन पाएं, पर गुरुजी जैसे कुछ अंश हमारे जीवन में उतरें।** हमारे ही कल्याण–उद्धार के लिए, जो भक्तिभाव हमें सीखाना चाहते हैं और जो सुहृद्‌भाव हम में आरोपित करना चाहते हैं, वो हम हमारे जीवन में स्वयं चरितार्थ करने की कोशिश करें...

इस ज़माने में भगवान की प्राप्ति बहुत ही दुष्कर है। लेकिन गुरुजी ऐसे संत हैं। **जीवन में गुरु का बहुत महत्त्व है और गुरुजी के हम साक्षात् दर्शन कर पाते हैं।** मुझे कबीरजी की एक साखी याद आती है– *कबीरा ते नर अंध है, जिसने गुरु को ना समझा और हरि रुठ्या गुरु ठोर है, गुरु रुठ्या नहीं कोर।* एक बार भगवान भी हमसे मुँह मोड़ लें, तो गुरु हमारे साथ हैं। वो भी हमारे लिए ठीक है, तब भी हमारा उद्धार है। हम बहुत सारे ऐसे हैं कि जो संस्कृत का ये श्लोक हर रोज बोलते होंगे- *ध्यान मूलम् गुरु मूर्ति, पूजा मूलम् गुरु पदम्, मंत्र मूलम् गुरु वाक्यम्, मोक्ष मूलम् गुरु कृपा।* वैसे ही **गुरुजी का** स्थान हमारे हृदय में है यानि कि उनका **बोलना हमारे लिए मंत्र है, उनकी कृपा हमारे लिए मोक्ष है।** यह जानते हुए भी अगर हमने उन पर भरोसा नहीं रखा, कुछ समर्पण नहीं किया, तो मुझे लगता है कि हमारा जीवन एक क्षुल्लक जीवन है... गुरु की प्राप्ति बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है। ऐसा नहीं कि बहुत सरलता और सहजता से हमें मिल जाते हैं... हमारे **गुरुजी जो शब्दों से कहते हैं, इससे अधिक अपने व्यवहार से कहते हैं।** शब्द में भी ताक़त है, लेकिन व्यवहार में इससे भी ज्यादा ताक़त है। **उन्होंने जो पूरा परिवार यहाँ पर बसाया, मुझे लगता है कि उसमें गुरुजी का व्यवहार मुख्य है...**

प.पू. गुरुजी

आप सब यहां आए हो, इसका दिल में कितना आनंद है, वो न मैं बता सकता हूँ और न आप अंदाजा लगा सकोगे, हक़ीक़त में। साथ में एक गम भी है कि परसों तुम सब चले जाओगे। फिर सब सूना हो जाएगा। मैं कितनी बार कह चुका हूँ कि आप लोग आते हो, तो वापसी का थोड़ा ऐसा रखो कि एक साथ सब न चले जाओ। थोड़े-थोड़े करके जाओ, ताकि मुझे महसूस न हो। आप हो कि मानते नहीं।

अभी शायद स्नेहलस्वामी ने बात की कि गुरुजी बातें करते थे तो काकाजी और पप्पाजी खूब ध्यान से सुनते थे। मुझे भी यह ख्याल है कि मैं जब बात करूँ, तो काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी खूब ऍलर्ट होकर सुनते। पर इसकी वजह आपको पता नहीं है। वे इसलिए सुनते थे कि यह कोई न कोई बॉम्ब छोड़ेगा। फिर हमारी बातों में उसे किस तरह डिफ्यूज़ कर लेना, वो ध्यान में रहे, इसलिए सुनते थे। काकाजी ने खुद मुझे एक बार कहा था कि तू बात करे तब मुझे सुनना पड़े, ताकि समेटा जा सके। पप्पाजी कहते कि हमारी कोई लायकियत (योग्यता) की जरुरत नहीं है। हमारे ही नॅचर, हमारे ही प्रारब्ध को हमारी ऐसेट बना कर बापा हमारा ट्रांस्फॉर्मेशन करते हैं। यह कुटुंबभाव की जो बातें चलती हैं न, वो एक चीज मेरे अंदर पहले से थी। **मैं जहाँ-जहाँ जिस जगह पर रहा, बस! मुझे यह रहा कि यह मेरा अपना है! राईट फ्रॉम स्कूल! स्कूल में भी मैं पढ़ता था, तो बस वो मेरी दुनिया जैसी थी। वो टीचर्स, वो लड़के-लड़कियाँ एक परिवार जैसा लगता था... तो, जिस समाज में रहा, वहाँ एक अपनेपन से।** अपनेपन से मैं आपको कुछ कह भी दूँ... मतलब अपनेपन में– ऑवरिथिंग इज़ फेयर इन लव एन्ड वॉर। ऐसी यह बात है। **बस इसी तरह, इसी बेस पर इस सत्संग में मैं रहा...**

भजन हमारी आत्मा की खुराक है। जैसे खाना नहीं खाएंगे, तो हमारी बॉडी वीक हो जाती है। उसे नरिशमॅन्ट चाहिए। इसी तरह भजन नहीं करेंगे, तो जीव में निर्बलता रहेगी। अगर हम भजन रेग्युलर नहीं करेंगे, तो सारी क्रियाएं मिकैनिकल लगेंगी। फिर मन में ऐसा भी होगा कि क्या यही करा करना है? और रेग्युलर भजन डॅइली उमंग से करेंगे, मैंने शब्द इस्तेमाल किया-उमंग से! हम करते हैं लेकिन शरमाशरमी बैठना पड़ता है। ऐसे नहीं। **जैसे भूख लगती है, तो कैसे चाव से खाना खाने बैठ जाते हैं। इस तरह ऐसे भजन की भूख लगे और हम भजन करें, तब वो जैसे आरती में है न 'नित-नित नौतम लीला करते अविनाशी...' वो मानी जाएगी।** फिर कैसे भी अच्छे या बुरे प्रसंग बनेंगे, लेकिन हमारा भजन यदि रेग्युलर होगा, तो हमें ख्याल पड़ता जाएगा कि ये तो हमें मिले स्वरूप खेल रहे हैं। बस, भजन करके इससे आगे निकल जाओ।

ये जो जोग मिला है न, वह ये बापा ने सचमुच आऊट ऑफ धी वे जाकर गुणातीत समाज को फेवर की हुई है कि काकाजी और पप्पाजी का हमें जोग दे दिया। **बापा का जोग मिला-वे साथ ही थे, पर यदि काकाजी**

और पप्पाजी न होते, तो आज हमारे समाज में जो अन्डरस्टॅन्डिंग है, वो नहीं हो सकती थी। स्नेहलस्वामी ने बात की तब मुझे अक्षरविहारीस्वामिजी का एक प्रसंग याद आया। सोनावती में संतों के जाने का स्वामी ने सारा एरेन्ज किया था। पर, बात आई कि अब हॉल बनाना है तो अक्षरविहारीस्वामी रूक जाएं। पर, काकाजी और पप्पाजी का जोग था, उनके साथ का एक लगाव था, तो ये चीजें उन्हें टच नहीं करीं; इतना ही नहीं, इनको ख्याल आया कि माणावदर का समाज काकाजी के साथ जुड़ा हुआ है। वो जरूर आग्रह करेगा कि अक्षरविहारीस्वामी को तो बुला लो। तो उन्होंने महंतस्वामी से इस बारे में पूछा। ये प्रसंग ठीक से समझना और खूब गहराई से इसके बारे में सोचना। महंतस्वामी ने कहा– *हाँ, वो लोग लिखवाएंगे तो सही, वहाँ से काग़ज़ आएगा।* अक्षरविहारीस्वामी ने पूछा– *मुझे क्या करना?* महंतस्वामी ने कहा– *भले बापा लिखें, पर उसमें अंदर अगर मेरी लिखावट न हो, तो आने की जरूरत नहीं, तुम मत आना।* बस, वो मॅटर वहां पर सौल्व हो गया और हुआ भी ऐसा ही। वहाँ से देवशीबापा इत्यादि ने कहा और बापा ने लेटर लिख भी दिया। सबको उम्मीद भी थी कि केशोद की फ्लाईट में अक्षरविहारीस्वामी आएंगे। पर, अक्षरविहारीस्वामी की महंतस्वामी से बातचीत हुई थी, उसके मुताबिक वे नहीं आए। फिर बापा कितने खुश हो गए कि आशीर्वाद का काग़ज़ भी लिखा कि आपने ये हॉल की सेवा की, तो तुम्हारे हृदय में महाराज बिराजमान रहेंगे। ये आशीर्वाद महंतस्वामी के साथ के संबंध से मिले।

मैं कई बार बात करता हूँ न कि **काकाजी-पप्पाजी ने हम लोगों को चाबियाँ दीं हैं... बापा को-प्रभु के स्वरूप को छोटी-सी बात पर तुरंत कैसे राजी कर लेना, वो चाबियाँ काकाजी-पप्पाजी ने हमें सिखाईं। हमारे लिए यह रास्ता कितना आसान कर दिया!** ये सोचने की बात है। अक्षरविहारीस्वामी को काकाजी-पप्पाजी का जोग था, तो यह चीज आसान बनी। ये कैसी बात होगी कि महंतस्वामी कह पाए कि भले बापा का काग़ज़ आए, मैं नहीं कहूँ तब तक तू नहीं करना। अपना समाज का जो डॅवलपमेन्ट हुआ है, ये चीजें बड़ी आसानी से हल हुई हैं न, इसलिए समझ नहीं आतीं। बाहर का कोई देख कर बोलता है, तब हमें ख्याल आता है कि ओहो! हमारी क्या एचीवमेन्ट हुई है, एटेन्मेन्ट हुई है।

...ये काकाजी और पप्पाजी के जोग की बदौलत है! उन्होंने हम लोगों को आपस में इतना जोड़ दिया है... **फॅमिली के ये जो सेन्टीमेन्ट्स डॅवलप हुए हैं, वो काकाजी-पप्पाजी के माध्यम से बापा ने कराए हैं।** यह माध्यम बीच में नहीं हो, तो हम पचास हज़ार, लाख, दो लाख आदमी भी इकट्ठे करके मास गॅधरिंग कर पाएंगे और फिर लिखेंगे भी कि इतने आदमियों ने खाना खाया। मुझे दिल में दर्द भी होता है कि **काकाजी-पप्पाजी की ये बातें हम खुद दोहराते भी हैं, लेकिन जिस ढंग से हमें जाना चाहिए, वो हम खुद भी नहीं जाते।** मुझे ऐसा लगता है कि **हमें काकाजी-पप्पाजी का भरोसा जरूर था, लेकिन बुद्धि से परे का जो विश्वास होना, वो कोई अलग ही फिल्ड है।** क्योंकि हमारी गिनतियाँ कुछ

अलग हैं और वे जो कहते हैं, वो चीज अलग है। इनकी भाषा भी हम समझ नहीं पाते। मैं एक छोटी-सी बात करता हूँ। यहाँ दस बारह साल तक कोई सत्संग बढ़ता नहीं था। तब भी काकाजी काग़ज़ में लिखा ही करते कि वहाँ सत्संग खूब बढ़ जाएगा। पंजाबियों-सिन्धियों में सत्संग खूब बढ़ जाएगा। काग़ज़ में सिन्धी लिखा हुआ आता, तो मैं भी सोचूँ कि काकाजी ये सिन्धी कहां से बीच में ले आते हैं? यू.पी. के कहें तो मैं समझूं कि नर्धन इन्डिया के भगत बढ़ेंगे, पंजाब के बोलें तो मैं समझूं कि चलो जाट बढ़ेंगे, वो भी समझ आए। पर देखो! ये मल्कानी एक सिन्धी दस हज़ार सिन्धियों के बराबर है। हक़ीक़त में। दस हज़ार तो बोलने के लिए बोला, बाकी इससे भी आगे कहें तो चले। लेकिन अपने भेजे में यह बात उतरेगी नहीं। जब सिन्धियों के टोले के टोले इकट्ठे हों, तब काकाजी की बात सही। ऐसी छोटी-छोटी चीजें हैं। हम सब जो काकाजी-पप्पाजी के पास रहे, हमें तो बस भजन ही करा करना है। मैं बापा से पूछता भी – *हम सत्संग में आए हैं, तो हमें क्या मांगना चाहिए?* बापा ने जवाब दिया– ***मैं जब से शास्त्रीजी महाराज के संबंध में आया, मैंने एक ही चीज मांगी है कि हे शास्त्रीजी महाराज! आपके स्वरूप की पहचान कराना!***

...काकाजी-पप्पाजी ने हमें कैसी बातें सिखाई, दोनों की भाषा अलग थी। काकाजी कहते – *हर क्रिया भगवान के नाम का नमक डाल कर करनी।* पप्पाजी बोलते थे - *पहला प्रभु, पछी पगलुं।* बात तो एक ही है। तो, हम कुछ न करें; सिर्फ अपने कोई भी काम लौकिक, अलौकिक, पारलौकिक, आध्यात्मिक, जो भी हैं, हम इतना तो जरूर समझें कि हमारा स्टेटस अलग है। **हमें इन्टलॅक्चुअल एप्रॉच लेने के बजाय भजन से काम कराना है।** सच में समझना, गुणातीत समाज के सेवकों का स्टेटस एकदम अलग है... **हमें कोई काम कराना हो, तो हम भजन करें।** फिर महाराज अपने आप चक्र गतिमान कर देंगे। हक़ीक़त में कर देंगे। पर हमें ये भरोसा रहता नहीं है। हम करते भी हैं, लेकिन थोड़ा-थोड़ा अपना भी साथ में रखते हैं कि महाराज ने नहीं किया, तो अपना स्टॉप गैप अरेन्जमेन्ट तो काम में आए, वो न करें! हरिप्रसादस्वामिजी ने एक बार बहुत अच्छी बात की थी कि अपने यहाँ या तो ज़ीरो या तो सौ! पास होने के लिए तुम साठ मार्क ले आओ, सत्तर ले आओ, अस्सी मार्क ले आओ, नाईन्टी फाईव पर्सन्ट ले आओ, फेइल। पूरे हन्डरेड मार्क ही चाहिएँ।

इसी तरह, ऐसे संत का भरोसा, जहाँ हमें श्रद्धा बैठी हुई है, वो श्रद्धा भी महाराज ने बिठाई है सो, वो सच्ची है। इसकी भी हमें चिंता करने की जरूरत नहीं। हम सब यहाँ जुड़ने आए नहीं थे, महाराज ने जोड़े हुए हैं। **सर्वोपरि स्वामिनारायण! उन्होंने हमें यहाँ जोड़ा है, वे हमारा अहित होने नहीं देंगे। इस विश्वास से, हम भजन करते हुए, जो कुछ बने वो होने दें–ऐसा बल, बुद्धि, शक्ति महाराज देते रहें, गुणातीत स्वरूपों हमें देते रहें यही प्रार्थना...**

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

✡✡✡

शेष अगले अंक में...

याद कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में **प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार को 60 वर्ष** पूर्ण हो रहे हैं,
सो, अब 2012 की 3, 4 एवं 5 फरवरी के तीन दिन
'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' के रूप में मनाएंगे
और...
तब साथ ही प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव भी मना लेंगे।
तो, प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती एवं
प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त
प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी के अनुभव,
जो आपको भीतर तक छू गए हों,
उन्हें हिन्दी/अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते* पर भेजते रहें,
जिससे कि 'भगवत् कृपा' के इस स्तंभ के अंतर्गत
वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।
सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે **પ.પૂ. કાકાશ્રીના સાક્ષાત્કારને ૬૦ વરસ** પૂરા થાય છે,
તેથી હવે ૨૦૧૨ની ૩, ૪ ને ૫ ફેબ્રુઆરીના ત્રણ દિવસ
'યોગી પરિવાર હીરક આનંદોત્સવ' રૂપે ઊજવીશું;
અને...
ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ પણ ભેગો ઊજવી લઈશું.
પ.પૂ. કાકાશ્રીના સાક્ષાત્કારની હીરક જયંતી અને પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે
પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. ગુરૂજીના અનુભવ-પ્રસંગો
જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય,
એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો,
જેથી 'ભગવત્ કૃપા'ના આ સ્તંભ હેઠળ એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.
સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

'योगी परिवार का अद्भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

આવો દિલ્હી.. ૩, ૪, ૫ – ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૨

(કાકા હે ! આકાશ છો તમ, બહુ આવો યાદ પ્રીતમ...)

ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની પ્રગટની યુગલ ઉપાસનાના સ્વરૂપસિદ્ધ,
બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના રાજદુલારા અને બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજના પ્રાણજ્યોતિ એવા પ.પૂ. કાકાશ્રી!
એમણે સર્વપ્રથમ ઝંપલાવી અસલી નારાયણને જોયા ને પરમ પૂજ્ય યોગીબાપા રૂપે એ પ્રગટ પ્રભુને ઓળખી-પામી-રાખી-વશ કરી
આપણને ઓળખાવ્યા, આપ્યા ને એમાં રહેતાં કર્યાં ! પોતાને થયેલા સાક્ષાત્કારની તો જાણે લ્હાણી કરી!
તેથી જ, જોગી જગતના તેઓ સર્જક બન્યા-સુકાની બન્યા!!
આપણ સહુ માટે અરે! અનેક ભક્તો-મુક્તો માટે સંકલ્પ પરની દિવ્યભૂમિકાની પ્રેરણામૂર્તિ બન્યા ને દૃષ્ટાઓના દૃષ્ટા બન્યા!!!
એમને લઈને તો 'યોગી પરિવાર'માંથી પાંગરેલા 'ગુણાતીત સમાજ'માં આજે આપણું સહુનું અસ્તિત્વ છે.
એ **ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીના આ ઐતિહાસિક અને અપૂર્વ સાક્ષાત્કારની હીરક જયંતી** ૨૦૧૨ની ત્રીજી ફેબ્રુઆરીના શુક્રવારે આવી રહી છે.
આપણે સહુ ભેગા મળી **'યોગી પરિવાર હીરક આનંદોત્સવ'રૂપે એ ૨૦૧૨ના શુક્ર-શનિ-રવિવારે એમ ૩, ૪ અને ૫ ફેબ્રુઆરી**ના ત્રણ દિવસ
દિલ્હીના આપણા મંદિરે સર્વે પ્રત્યક્ષ ગુણાતીત સ્વરૂપો, ગુણાતીત સમાજના સહુ જ્યોતિર્ધરોની નિશ્રામાં
અને
દેશ-વિદેશના અનેક મુક્તોની હાજરીમાં અનેરા ઉત્સાહથી ભક્તિભાવપૂર્વક ઊજવીશું.
વળી, બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ દ્વારા ૧૯૬૧માં દીક્ષિત ૫૧ યોગેશ્વરો પૈકીના
અને
ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીના દિવ્ય માનસપુત્ર ને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોના લાડીલા
ને
અનેક સાધક મુક્તોના આદર્શ તેમજ કુટુંબભાવથી ઓતપ્રોત એવા વિશાળ ભક્ત સમુદાયના હૃદય સિંહાસને વિરાજેલા
ગુરૂ, સુહૃદ્ અને પથપ્રદર્શક એવા આપણાં સહુના વ્હાલા **પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાકટ્ય દિવસ** પણ આ વર્ષે જ આવી રહ્યો છે.
ગુરૂભક્તિના આદર્શ એવા પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીની અંતરની ઈચ્છા અને આજ્ઞાને અનુસરી
એમનો આ ૭૫મો પ્રાકટ્ય દિવસ **આ મહોત્સવ અંતર્ગત જ ૫મી ફેબ્રુઆરીના સાંજે ઊજવીશું.**

પરમ પૂજ્ય હંસાદીદીના શબ્દોમાં –**'કાકા રે, કાકા રે, આજ આવ્યું ટાણું ; નજરાણું તમને દેવાનું...'**

તો, આ દિવ્ય મહોત્સવે સપરિવાર મિત્રમંડળ સહિત **૨૦૧૨ની ફેબ્રુઆરીના આ દિવસોમાં દિલ્હી આવવું રખે ચૂકતા...**
આવો... પધારો... ધન્ય થાઓ...

आओ दिल्ली...

दिनाँक ३-४-५ फरवरी, २०१२ के शुक्र-शनि-रविवार को
गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज के
लाड़ले दिव्य मानस सपूत, बृहद् गुणातीत समाज के अजोड़ सर्जक
एवं
हम सभी के प्राणाधार गुरुहरि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के
ऐतिहासिक और अपूर्व साक्षात्कार की हीरक जयंती महोत्सव
और इसी के अंतर्गत
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा दीक्षित,
ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के लाड़ले
व
हम सभी के आदर्श, सुहृद्, पथप्रदर्शक प.पू. गुरुजी का ७५वाँ प्राकट्य दिन मनाने...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	28.9.'11,	बुधवार	—	नवरात्रे प्रारंभ
(2)	दि.	6.10.'11,	गुरुवार	—	**दशहरा,** प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(3)	दि.	7.10.'11,	शुक्रवार	—	एकादशी, व्रत
(4)	दि.	9.10.'11,	रविवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी अंतर्धान तिथि
(5)	दि.	11.10.'11,	मंगलवार	—	**शरदपूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन** **प्रगट ब्रह्मस्वरुप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन** **प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि**
(6)	दि.	14.10.'11,	शुक्रवार	—	ब्रह्मस्वरुप जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(7)	दि.	23.10.'11,	रविवार	—	एकादशी, व्रत
(8)	**दि.**	**24.10.'11,**	**सोमवार**	—	**धनतेरस (अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा'– सायं 6:00 से 7:30)**
(9)	दि.	**25.10.'11,**	मंगलवार	—	अक्षर चौदस
(10)	**दि.**	**26.10.'11,**	**बुधवार**	—	**दीवाली (अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन'– सायं 4:30 से 6:00)**
(11)	**दि.**	**27.10.'11,**	**गुरुवार**	—	**अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष–विक्रम संवत २०६८ प्रारंभ** **दिल्ली गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन–सुबह 9:30 से 11:30** **अन्नकूट आरती – सुबह 11:45 बजे**
(12)	दि.	28.10.'11,	शुक्रवार	—	**भैयादूज**
(13)	दि.	31.10.'11,	सोमवार	—	**लाभपंचमी**
(14)	दि.	6.11.'11,	रविवार	—	प्रबोधिनी एकादशी–व्रत, तुलसी विवाह-प्रारंभ; *'अक्षरज्योति' में ठाकुरजी के समक्ष सब्जी हाट लगेगी।*
(15)	दि.	10.11.'11,	गुरुवार	—	**देवदिवाली,** तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

(Air Mail) '**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052